नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

समुद्र का शेर

दुर्गा प्रसाद शुक्ल



आवरण प्रशान्त सेन
चित्र हरिपाल त्यागी

□□

प्रथम संस्करण, १९७०

□□

नन्हे दोस्तो,

एक नये लेखक का यह पहला उपन्यास तुम्हारे हाथो मे है। जब तुमने उसे उठाया है तो आशा है, अन्त तक पढोगे भी। किन्तु उपन्यास पढने के पूर्व मैं तुम्हे उसके बारे मे कुछ बतलाना चाहूगा और वह यह कि 'समुद्र का शेर' कैसे और क्यो लिखा गया।

कुछ समय पहले की बात है। मैं इतिहास की एक पुस्तक पढ रहा था। उसमे लेखक ने पुर्तगीज उपनिवेशवादियो के भारत-आगमन से जुडी हुई लोमहर्षक घटनाओ पर प्रकाश डाला था। उसने अनेक घटनाओ का हवाला देते हुए पुस्तक मे यह भी बतलाया था कि किस तरह पुर्तगीज सौदागर एक हाथ मे तराजू और दूसरे हाथ मे तलवार लेकर भारत आये और किस भाति उन्होने चन्द लोगो के स्वार्थ के लिए सैकडो बेगुनाह लोगो के लहू की नदिया बहा दी। इन पुर्तगीज सौदागरो मे वास्को डि गामा भी था, जिसके बारे मे तुमने इतिहास की पुस्तको मे अवश्य पढा होगा।

जब मैं पुर्तगीजी अत्याचार पर इतिहास की यह साक्षी पढ रहा था तो मेरी आखो के सामने पुस्तक के पृष्ठो पर छपे काले अक्षरो के बीच अपनी 'सुजलाम्—सफलाम्' और 'शस्य श्यामलाम्' मातृभूमि का वह प्रदेश घूमने लगा था जहा सागर के पास खडे होकर ऊचे-ऊचे, हरे-भरे पर्वत आकाश से बाते किया करते है—यानी कोकण। साथ ही मुझे याद आने लगी थी वह छोटी-सी कहानी, जो कोकण की यात्रा करते समय मेरे एक मित्र ने सुनायी थी। यह कहानी एक ऐसे बालक की थी, जो मछुए का बेटा होकर भी पानी से बहुत डरता था। पर जब एक दिन परस्त

पड़ी तो वह अकेला ही समुद्र की लहरों पर निकल पड़ा। मुझे यह कहानी बहुत अच्छी लगी थी।

उसने मुझे बहुत प्रेरणा भी दी थी। उसने मुझे सिखाया था कि परिस्थितियों का दास कहा जाने वाला मनुष्य यदि सूझ बूझ और हिम्मत के साथ, निर्भीकतापूर्वक आगे बढ़े तो वह परिस्थितियों का स्वामी बन सकता है। अपनी इस प्रथम कृति में मैंने 'बानू' के माध्यम से यही बात कहने की चेष्टा की है कि भय कहीं बाहर नहीं, हमारे मन में ही छिपा होता है और संकट से निपटने का सबसे अच्छा रास्ता आगे बढ़कर उससे जूझना ही है क्योंकि संकट के साथ संघर्ष करने पर हमारे गुण और निखरते हैं, हमारा आत्म-विश्वास बढ़ता है। इसलिए जिन्दगी में हमें सदा संकटों और संघर्षों का स्वागत करना चाहिए। बानू ने यही किया था।

जब मैं यह उपन्यास लिख रहा था तो मुझे कुछ और लोग भी याद आ रहे थे। ये वे लोग थे, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत हितों को पूरी तरह भुलाकर हजारों-लाखों की भलाई के लिए यातनाएं सही थीं, संघर्ष किये थे और उसमें अपने प्राण तक होम दिये थे। ये सब लोग केवल एक नाम से ही जाने जाते हैं और वह नाम है—'क्रान्तिकारी'। ऐसे लोग देश-काल के परे, जाति-धर्म की सीमाओं से ऊपर सबके होते हैं और मेहनत करने वाले ईमानदार लोगों द्वारा सदा याद किये जाते हैं।

'समुद्र का शेर' ऐसे ही लोगों की पावन स्मृति से प्रेरित, इतिहास की पृष्ठभूमि पर आधारित एक काल्पनिक उपन्यास है।

तुम्हारा
दुर्गाप्रसाद शुक्ल

समुद्र का शोर

तूफान

यह चार-पांच सौ वरस पहले की कहानी है।

कोकण तब भी आज की भांति ही हरा-भरा और सुन्दर था। एक ओर आकाश से बात करते ऊँचे-ऊँचे पहाड और दूसरी ओर मीलो तक लहराता अरब सागर। तब भी कोकण की जिन्दगी आज जैसी ही कष्टो-भरी थी। लोग पत्थरो पर आम उगाते, जगलो मे घास के समान जगह-जगह उग आये काजुओ को तोडकर खाते, समुद्र मे छोटी-छोटी नावो पर सवार होकर दूर-दूर तक मछलिया मारने निकल जाते।

ये लोग छोटे गावो मे रहते और किसी तरह अपनी गुजर-वसर करते। ऐसा ही एक गाव था। नाम था उसका वेंगुरला। यह गाव समुद्र से विलकुल लगा हुआ था। वहा के निवासी मछलिया पकडने मे वहुत कुशल थे। गाव का छोटे से छोटा बच्चा भी समुद्र मे जाने से जरा न डरता। सागर की छोटी-वडी लहरे उन्हे अपनी धरती के ऊचे-नीचे टीलो की भाति ही मालूम पडती। एक लडका ऐसा भी था, जो समुद्र के पास जाने मे भी कापने लगता था। उसका नाम था वालू।

वालू गाव के मुखिया का लडका था। पत्थरो और मछलियो की हड्डियो से हथियार वनाने मे उनका कोई सानी

नहीं था। वह हिम्मती भी था, पर समुद्र के पास जाने में वह सदा कतराता था। गांव के छोटे लड़के ही नहीं, बड़े-बूढ़े भी बालू को हंसा करते और जबरन समुद्र की ओर ले चलने की कोशिश किया करते। पर बालू को तो जैसे समुद्र का नाम सुनते ही बुखार चढ़ जाता। वह रोने लगता और जबरन खींचकर ले जाने वाले लोगों के हाथ-पैर जोड़ने लगता।

बालू की आंखों के सामने एक दृश्य तैर जाता और वह चीख पड़ता, "नहीं-नहीं, मैं सागर में नहीं जाऊंगा। वे मुझे मार डालेंगे।"

बालू की बातें सुनकर लोग हंस पड़ते। कोई उसे डरपोक कहने लगता और कोई कहता कि उसे पीपल पर रहने वाला ब्रह्म-राक्षस लग गया है। पर बालू किसी की नहीं सुनता। उसकी आंखों के सामने तो बस एक दृश्य तैरने लगता।

लगभग दो बरस पहले की बात थी। बालू अपनी मां के साथ नाव में बैठकर मछलियां पकड़ने समुद्र में गया था। उस दिन मौसम कुछ ठीक नहीं था। पर मछलियां पकड़ना भी जरूरी था। उनके घर खाने के लिए कुछ भी नहीं था। बालू का पिता लकड़ी काटने जंगल में गया था और घर पर बालू की मां के सिवा और कोई नहीं था। सो, बालू की मां उसे ही साथ लेकर समुद्र में निकल पड़ी। वे दोनों नाव खेते हुए समुद्र में काफी दूर तक निकल गये। यहां तक कि समुद्र के बीचोंबीच बने एक द्वीप को भी पार कर गये। उस द्वीप का नाम [illegible] द्वीप था [illegible]। न वहां पर [illegible] बाग में [illegible] था। [illegible] गांववालों [illegible] [illegible] और वे [illegible] का पता लगा

लेते। वालू की मा को उस दिन मारुति के टीले के आगे भी मछलिया नही मिली तो वह और दूर निकल गयी।

अचानक आसमान मे वादल छा गये। वालू की मा समझ गयी कि अब तूफान आने ही वाला है। वह फौरन नाव को मोडकर गाव लौटने लगी। वह कुछ दूर ही नाव खे पायी थी कि तूफानी हवाए चलने लगी। हवा के थपेडो मे उनकी छोटी-सी नाव हवा मे उडते तिनको-सी उतराने लगी। वालू की मा साहसी थी। वह जानती थी कि यदि वह धैर्य छोड देगी तो वालू भी घवरा जाएगा। तब उसे सभालना मुश्किल हो जाएगा। इसलिए वह धैर्यपूर्वक नाव खेती रही। तूफान तेज होता जा रहा था। धीरे-धीरे आस-पास की सारी चीजे तूफान की चादर मे छिप गयी। वालू की मा को सूझ नही पडा कि वह कहा को नाव ले जाए। सहसा किसी चट्टान से उसकी नाव टकरायी और उलट गयी। बालू तेजी से चीख उठा, 'मा !' पर उसकी मा को तूफान की हरहराहट मे कुछ भी नही सुनायी दिया। वह अपनी पूरी शक्ति के साथ तैरने की कोशिश करती रही था। बालू भी टूटी हुई नाव के सहारे तैरने लगा। वीच-वीच मे वह पुकारता जाता, 'मा, मा !' पर उसे अपनी माँ का कोई उत्तर नही सुनायी पडा।

धीरे-धीरे तूफान थम गया।

वालू को आसपास की चीजे नजर आने लगी। उसे विलकुल पास ही मारुति टीले का लाल झडा भी नजर आने लगा। वालू ने फिर पुकारा, 'मा !' पर उसे कोई उत्तर नही सुनायी दिया। वालू काप उठा। उसने चीखकर आवाज लगायी, 'मा !' पर इस वार भी वहा से कोई उत्तर नही सुनायी दिया।

बानू धीरे-धीरे सामने टीले की ओर बढ़ने लगा। कुछ ही देर में वह वहां जा पहुंचा। बानू को उम्मीद थी कि मां टीले पर मिल जायगी पर उसकी मां वहां भी नहीं थी। अब तो बानू घबराकर रो उठा। बीच-बीच में वह चिल्लाता भी जाता, 'मां, मां मां मां!' पर उसकी मां तो समुद्र के गर्भ में समा गयी थी। वह कहां से उत्तर देती।

धीरे-धीरे शाम घिर आयी और फिर रात का अंधियारा चारों ओर छाने लगा। कुछ ही देर बाद चारों ओर भयानक अंधकार छा गया।

बानू आंखें फाड़-फाड़कर चारों ओर देखने की कोशिश करने लगा, पर सिवा काले अन्धकार के उसे कहीं कुछ नजर न आ रहा था। हां, कानों में लहरों की ध्वनि अवश्य सुनायी दे रही थी। बानू की घबराहट और बढ़ गयी। वह रोकर चीख उठा—'मां, मां, तू कहां है? बोलती क्यों नहीं?"

पर सिवा लहरों की आवाजों के उसे कुछ नहीं सुनायी पड़ा।

बालू दूर से ही उसे पहचान गया। वह हाथ उठा-उठाकर चिल्लाने लगा। उधर नाववालो ने भी बालू को देख लिया था। उन्होने भी नाव का रुख मारुति टीले की ओर मोड दिया।

उस नाव मे बालू का पिता भी था। वह बालू और उसकी मा की खोज मे ही निकला था। जब रातभर दोनो घर नही आये तो वह गाववालो के साथ उन्हे खोजने निकल पडा था।

द्वीप पर बालू को अकेले देखकर उसका माथा ठनका। उसके साथ के अन्य लोग भी सारा मामला समझ गये। वे जान गये कि कल शाम आये तूफान मे बालू की मा की नाव फस गयी होगी और किसी चट्टान से टकराकर डूब गयी होगी। बालू तो बच गया होगा, पर वह स्वय डूब गयी होगी। उन्होने भारी मन से नाव तट पर लगायी।

बालू भी अब तक नाव मे बैठे अपने पिता को पहचान गया था। वह नाव की ओर दौडा। अब तक उसका पिता नाव से उतर आया था। बालू उससे लिपटकर बोला—"बापू !" और फिर रुलाई के साथ वह चीख पडा—"बापू मा ! माँ !"

बालू का पिता समझदार था। वह बोला—"अरे, तू रोता क्यो है ? तेरी मा तो घर पहुच गयी है। उसी ने तो हमे तुझे लेने भेजा है। आ, चल, नाव मे बैठ !"

पिता की बात सुनते ही बालू का सारा दु ख न जाने कहाँ उड गया। वह उछलकर नाव मे बैठ गया। नाव गाँव की ओर बढ चली।

रास्ते भर बालू पिता से अपनी मा के बारे मे पूछता रहा। उसके पिता ने भरसक अपने दु ख को दबाने की कोशिश की,

तब उसकी आँखों में आँसू उतर ही आये। पिता की आँखों में आँसू देखकर बालू भी मन-ही-मन सिहर गया। उसने सोचा—'बापू रो क्यों रहे हैं?' उसने अपने पिता से यह प्रश्न करना चाहा, पर तभी नाव में बैठे लोगों की आवाजों ने उसका ध्यान बटा लिया। समुद्र की लहरों पर एक रंगीन कपड़ा उतर रहा था।

अब नाव उसी ओर मोड़ दी गयी थी। जब नाव उस रंगीन कपड़े के पास पहुँची तो एक गाँववाले ने समुद्र में छलांग लगा दी। कुछ ही क्षणों में वह रंगीन कपड़ा लेकर नाव में वापस आ गया।

उस रंगीन कपड़े को देखते ही बालू सिहर उठा। वह तो उसकी माँ की साड़ी का ही एक हिस्सा था। अगर माँ घर में है तो उसकी यह रंगीन साड़ी का टुकड़ा कहाँ से आया, बालू ने सोचा। तभी उसने देखा कि उसका पिता उस रंगीन साड़ी के टुकड़े को हाथ में लेकर सिसकने लगा है। बालू की समझ में कुछ नहीं आया। वह 'बापू' कहकर अपने पिता से लिपट गया।

इसके बाद नाव कब गाँव पहुँची, लोग उसे कब और किस तरह घर ले गये, बालू को पता नहीं।

दो बेजुबान दोस्त

उस दिन शाम हो चली थी। बालू एक टीले पर बैठा, सूरज का समुद्र मे डुबकी लगाना देख रहा था। आसमान लाल-लाल हो उठा था। मानो किसी ने होलिया जला दी हो।

बालू के पास ही उसका कुत्ता 'मोती' बैठा हुआ था। वह भी शायद सूरज का डुबकी लगाना देख रहा था। सहसा बालू ने मोती की गरदन मे हाथ डालकर उसे अपनी ओर खीच लिया। मोती ने अपने माथे से बालू की पसलियो मे रगड की तो उसने हँसते हुए उसे छोड दिया।

मोती बालू का बडा प्यारा साथी था। वह अपनी पूछ उठाये, जीभ लपलपाते हुए बालू के पीछे-पीछे उसकी छाया-सा लगा रहता। रात को वह उसी के साथ सोता था।

अचानक किसी पक्षी के पख फडफडाने की आवाज से बालू का ध्यान भग हुआ। उसने नजरे उठायी तो उसके सिर के चारो ओर 'बाज्या' चक्कर काट रहा था।

बाज्या को देखते ही बालू खुशी से भर उठा। उसने आवाज लगायी—'बाज्या!'

अगले पल ही 'बाज्या' उसके कधे पर आकर बैठ गया।

'बाज्या' एक बाज था। मोती के समान वह भी बालू का गहरा दोस्त था। जब से बालू ने बाज्या की जान बचायी थी, तब से वह भी बालू के पास ही रहा करता था।

डेढ वर्ष पहले की बात थी। बालू काजू के फल तोडकर घर लौट रहा था। उसके पीछे-पीछे दुम उठाये मोती भी चला आ रहा था।

अचानक चीं-चीं की आवाज से बालू चौंक उठा। जिधर से आवाज आ रही थी वह उसी ओर बढ़ा।

कुछ कदम चलने पर उसने देखा कि बाज का एक छोटा-सा बच्चा तड़प रहा है और ढेर सारे चील-कौवे उसे मारने की कोशिश कर रहे हैं।

बालू ने फौरन पत्थर के टुकड़े उठाकर मारने शुरू कर दिए। पत्थर लगते ही सारे चील-कौवे उड़-उड़कर पेड़ की ऊँची शाखा पर जा बैठे।

बालू ने दौड़कर बाज के उस तड़पते बच्चे को गोद में उठा लिया। बाज का वह बच्चा पहले तो पंख फड़फड़ाने लगा और भागने की कोशिश करने लगा। पर बालू ने उसे पुचकारा और हाथ में पकड़कर घर की ओर चल दिया।

घर जाकर बालू ने उस बाज के बच्चे की बड़ी सेवा की। उसकी टूटी टाँग पर पट्टी बाँधी। इस काम में उसके पिता ने भी उसकी मदद की।

कुछ ही दिनों में बाज का वह बच्चा ठीक हो गया। बालू ने उसका नाम बान्दा रख दिया। बालू ज्योंही उसका नाम लेकर पुकारता, बान्दा फौरन उड़कर उसके कंधे पर बैठ जाता।

घर लौटने लगा तो राह मे उसे कान्हा मिल गया।

कान्हा वालू को देखते ही उछल पडा। उसने कहा, 'वालू, कल मेरे साथ चलेगा न ?'

वालू ने वाज्या के पखो को प्यार से सहलाते हुए पूछा, 'कहा ?'



कान्हा ने खुशी से पुलकते हुए कहा, 'अरे, कल मछलिया पकड़ने गाव के सारे लड़के जाएगे। तू नही चलेगा ? तेरा बापू कुन्ना नाई के घर तेरे लिए एक नाव खरीद रहा था। मै अभी वहीं से आ रहा हू।'

कान्हा की बात सुनते ही बालू चौंक उठा। उसके बदन मे फुरफुरी-सी छूट गयी। उसे याद आया कि कल गाव के सारे लड़के अकेले समुद्र मे मछली मारने जाएगे। उनके साथ और कोई नही होगा। और पास होगा केवल मछलिया पकड़ने का एक जाल, टोकरी, खाने का कुछ सामान और एक भाला।

जाने कितने वर्षों से बालू के गाववाले यह त्योहार मनाया करते थे। उनके लड़के इस दिन अकेले मछलिया पकड़ने निकल जाया करते थे। जो लड़का सबसे ज्यादा मछलिया मारकर लाता, वही उन सबसे श्रेष्ठ समझा जाता। इस तरह गाववाले अपने बच्चो को साहसी बनाने और समुद्र की छाती पर सोने और उसकी लहरो से जूझने की शिक्षा दिया करते थे।

बालू जानता था कि उसे भी कल समुद्र मे मछलिया पकड़ने जाना पड़ेगा। इस खयाल से ही वह सिहर उठा।

तभी कान्हा ने पूछा, 'बालू, कल चलोगे न ?'

बालू कुछ उत्तर देता कि पीछे से कोई बोल उठा, 'अरे, बालू तो घर मे बैठकर चरखा कातेगा या कोई औजार तेज करेगा। वह हम लोगो के साथ नही जाएगा।'

उनमे से कोई व्यंग्य से कह उठा, 'अरे बालू तो बहादुर है—डरपोक !'

डक मार दिये हैं। शर्म से उसकी आखो मे आसू भी आ गये। वह कुछ कह भी नही पाया, पर उसकी ओर से उत्तर दिया कान्हा ने। "यह तो कल मालूम पडेगा कि लडकी कौन है ?"

इतना कहकर कान्हा ने बालू का हाथ पकड लिया और उसे खीनकर घर ले चला। वह जानता था कि अकेला छोडने पर बालू जरूर कही चला जाएगा।

राह मे उसने बालू को समझाया, "बालू, कल तू अपनी नाव मेरी नाव के साथ रखना। देखना, कल हम दोनो मिलकर कितनी सारी मछलिया पकडते है।"

पर बालू ने उत्तर दिया, "नही रे कान्हा, मैं नही जाऊगा। मुझे समुद्र के पास जाते ही बडा डर लगता है।"

कान्हा हॅस पडा। बोला, 'तू भी कैसी बात करता है रे, बालू ! तैरना तू जानता है। मछलियो की हड्डियो से हथियार तू बना लेता है। फिर भी तू इतना डरता है।' फिर कुछ रुककर कान्हा ने कहा, 'बालू, एक बार तो समुद्र मे चलकर देख।'

बालू ने कुछ उत्तर नही दिया। उसकी आखो के सामने अपने पिता का सिसकता चेहरा घूम गया। कान्हा जब उसे उसके घर के पास छोडकर अपने घर लौट गया तो बालू अकेले मे चिल्ला उठा, 'मा, मा !'

एक उल्लास भरा चेहरा

दूसरे दिन सुबह से ही समुद्र तट पर सारा गाव इकट्ठा हो गया। रग-बिरगे कपडे पहने गाव की औरतो ने गीत गाने शुरू कर दिए।

उधर समुद्र तट पर छोटी-छोटी कई नौकाए बधी थी। उनमे बास की छोटी-छोटी कमचियो मे बधी लाल-हरी-नीली-पीली झडिया हवा मे फहरा रही थी।

बालू का पिता गाव का मुखिया था। उसने भी बालू की नाव सजा रखी थी। पर बालू का कही पता नही था। समुद्र की रेत मे दो बास गडे हुए थे। उनमे आम के पत्तो की एक तोरण बधी हुई थी। नियम के अनुसार गाव के मुखिया ज्योही तोरण काटते, एक कतार मे खडे गाव के लडके दौडकर अपनी-अपनी नावो मे जा बैठते और उसे खेना शुरू कर देते।

मारुति देवा !'

वालू के पिता ने भी चिल्लाकर कहा—'जै मारुति देवा !' और तोरण तोड दी।

तोरण टूटते ही लडको मे भगदड मच गयी। सब कूद-कूद-कर अपनी-अपनी नाव मे सवार हो गये और पतवार खेने लगे।

देखते-देखते सारी नावे समुद्र का पानी चीरते हुए आगे बढने लगी, और धीरे-धीरे ओझल हो गयी। केवल एक नाव समुद्र तट पर डोलती हुई बधी रही। यह नाव वालू की थी।

दूर टीले पर एक पेड की ओट मे छिपा वालू सब देख रहा था।

जब एक-एक कर सब लोग चले गये, तब वह धीरे-से टीले से उतरा। कुछ ही देर मे वह अपनी नाव के पास जा पहुँचा। छोटी-सी नाव उसे बडी प्यारी लग रही थी। वह उसमे जाकर बैठ गया। मोती भी उछलकर नाव मे आ बैठा। इसी समय वाज्या भी कही से उडकर आ गया और वालू के सिर पर चक्कर काटने लगा।

वाज्या पर नजर पडते ही वालू का शरीर जाने क्यो सिहर उठा।

हवा मे छोटे-छोटे पख फडफडाकर उडता हुआ वाज्या बडा भला मालूम हो रहा था।

वाज्या को देखकर वालू के मन मे एक विचार आया—'जब यह पक्षी निडर होकर दूर-दूर तक उड सकता है, तब मैं क्यो नही समुद्र मे जा सकता ?'

वाज्या को देखकर वालू के मन मे एक असीम आत्म-विश्वास का सागर हिलोरे लेने लगा। उसने नाव खोली

और पतवार से नाव खेने लगा।

बाज्या उसके सिर पर चक्कर काटता हुआ उड रहा था। उससे बालू के मन मे साहस और आत्मविश्वास जाग रहा था।

नाव खेते-खेते बालू समुद्र मे बहुत दूर निकल आया। उसे एक बात पर बडा आश्चर्य हो रहा था कि अभी तक मारुति टीले की लाल पताका क्यो नही दीखी। असल मे बालू भटक गया था, और गलत दिशा मे बढा चला जा रहा था। इसी तरह सफर करते-करते जाने कब दोपहर आयी, और चली गयी। उसके बाद शाम घिर आयी। ढलते सूरज को देखकर बालू को घर की याद आयी। घबराकर उसने नाव वापस मोड ली, पर उसे दिशा का कोई पता नही चला। चारो ओर पानी ही पानी नजर आ रहा था। उधर रात का अँधियारा धीरे-धीरे बढता जा रहा था।

सहसा एक लहर आयी और बालू की नाव का सतुलन बिगड गया। नाव डगमगायी तो मोती उछल पडा और समुद्र मे जा पडा। मोती को नाव मे न देखकर बालू ने भी समुद्र मे छलाग लगा दी। अब बालू कही था और मोती कही। लहरो ने उसकी नाव भी छीनकर अलग फेक दी थी।

कभी-कभी सकट भी आदमी मे अपूर्व शक्ति भर देता है। बालू मे भी उस समय जाने कहा की शक्ति और [illegible]-बल आ गयी थी। वह हिम्मत से तैरता रहा और अन्त मे मोती के पास तक पहुचने मे सफल हो गया। उसने लपककर मोती की गरदन मे हाथ डाल दिया, और उसे लिये-लिये नाव के पास जाने की कोशिश करने लगा। कभी नाव उसके पास आ जाती और कभी लहरे उसे बहुत दूर कर देती। बहुत देर तक लहरो से बालू के

साहस और धीरज की जैसे परीक्षा लेती रही।

अन्त मे वालू, मोती को लिये-लिये नाव तक पहुचने मे सफल हो गया। उसने पहले मोती को नाव मे डाला, फिर स्वयं कूदकर उस पर चढ गया।

नाव मे चढकर वालू लेट गया। मोती भी थक गया था। वह भी उसकी वगल मे बैठ गया। उसे शीघ्र ही नीद ने आ धर दबोचा।

सुबह हुई। सूरज की तेज रोशनी ने वालू को जगा दिया। उसने देखा कि रात को भयानक दिखायी देने वाला सागर अव बहुत भला मालूम पड रहा है। सूरज की रोशनी मे उसका पानी भट्ठी से निकले सोने की तरह चमचम चमक रहा था।

वालू की थकान भी दूर हो गयी थी। उसने फिर पतवार उठायी और नाव खेने लगा। नाव तेजी से वढ चली।

निर्जन द्वीप और नरभक्षियो का देवता

समुद्र मे कुछ दूर और जाने पर वालू को एक दिशा मे हलका-सा धब्बा दिखाई दिया। उसने सोचा, शायद वह अपने गाव के पास पहुच गया है।

धीरे-धीरे धब्बे का आकार वडा होने लगा। जैसे-जैसे वालू उसके पास पहुचता गया, धब्बे की एक-एक चीज उसे साफ-साफ नजर आने लगी। इसके साथ ही वालू की निराशा भी वढती गयी। वह धब्बा असल मे एक द्वीप था। वालू को अव उसके तट पर लगे नारियल के पेड भी नजर आने लगे। वालू ने सोचा,

जरूर द्वीप पर लोग रहते होंगे। इस विचार के आते ही वह दुगुने उत्साह से पतवार चलाने लगा।

कुछ ही देर में बालू द्वीप के तट पर पहुंच गया। उसने किनारे आकर अपनी नाव अटकायी और फिर नीचे धरती पर कूद पड़ा। मोती भी उछलकर उसके पीछे आ गया। बालू को एकाएक भूख लग आयी। उसने दो दिनों से कुछ खाया-पिया नहीं था। अब तक संकट में था तो सब कुछ भूला हुआ था, पर खतरे के दूर होते ही उसकी भूख-प्यास जाग उठी। उसने मोती की ओर देखा। मोती भी जीभ लपलपाकर अपनी भूख जतला रहा था। बालू ने पेड़ों पर लगे कुछ नारियल तोड़े तथा उन्हें खाकर अपनी भूख मिटायी। मोती को भी नारियल खाने पड़े।

अब दोनों द्वीप में भीतर की ओर बढ़े। एकाएक एक बनैला सूअर फुफकारता हुआ उसके पास से निकल गया। उसने न तो मोती को देखा था और न बालू को। सूअर देखते ही दोनों ठिठककर खड़े हो गये। अब बालू को मालूम पड़ा कि अपने साथ कोई हथियार न लाकर उसने कितनी बड़ी गलती की है। पर अब क्या हो सकता था!

बालू सावधानी से आगे बढ़ने लगा। वह जानता था कि निहत्था होने के कारण अब बुद्धि के बल पर ही जंगली जानवरों से बचा जा सकता है।

द्वीप सारा हरा-भरा था। पेड़ फलों से लदे थे। पर कोई आदमी नजर नहीं आ रहा था। बालू को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि इतना सुन्दर और उपजाऊ द्वीप निर्जन क्यों है?

चलते-चलते बालू अचानक एक छोटे से मैदान के सामने

जा पहुचा। मैदान के बीचोबीच बने चबूतरे पर नजर पड़ते ही वह चीख-सा उठा। उसकी सास जैसे रुक गयी। चबूतरे पर लकडी के एक भयानक चेहरे वाले देवता की मूर्ति थी और उसके सामने नर-ककालो का ढेर लगा हुआ था।



बालू के पैरों के नीचे से जमीन निकल गयी। पर हिम्मत कर वह फौरन एक पेड़ की आड़ में हो गया। मोती भी शायद भाँप चुका था। वह भी बालू के पीछे-पीछे हो लिया।

बालू बहुत देर तक उस वीभत्स मूर्ति को ताकता रहा। साथ ही आहट भी लेता रहा कि कहीं कोई आ तो नहीं रहा है।

काफी समय बीत गया। वहां कोई भी नहीं आया। बालू की हिम्मत फिर लौट आयी थी। वह धीरे-धीरे बढ़ा और मूर्ति के पास जाकर खड़ा हो गया।

मूर्ति के आसपास हड्डियां ही हड्डियां बिखरी पड़ी थीं। चबूतरे पर हाथीदांतों का एक बड़ा-सा ढेर लगा हुआ था। उसके पास ही चमकते हुए ढेर सारे पत्थर पड़े हुए थे। बालू बड़ी देर तक वहां खड़ा रहा। सहसा उसे अपने पिता की एक बात याद आ गयी। उसका पिता बतलाया करता था कि समुद्र के बीच में कुछ ऐसे भी द्वीप हैं, जहां बड़े भयानक लोग रहते हैं। वे मनुष्यों को मारकर खा जाते हैं।

पिता की यह बात याद आते ही बालू कांप गया। उसके मन में जैसे कोई कहने लगा कि वह ऐसे ही किसी द्वीप में आ फंसा है। उस समय बालू अपने आपको बड़ा असहाय अनुभव कर रहा था। जरा से खटके पर उसे लगता था कि झाड़ियों के पीछे छिपा कोई नरभक्षी निकल आएगा और तब उसकी भी बलि चढ़ा दी जाएगी। बालू इतना डर गया था कि उसे अब हर झाड़ी के पीछे नरभक्षी लोग छिपे हुए नजर आ रहे थे। वह [illegible] किन्तु [illegible] वहां से ही भाग खड़ा होता पर मोती के भौंकने की आवाज ने उसे चौंका दिया। तब उसे मालूम हुआ, उस तरह भागने में [illegible] और खतरा है।

मोती के साथ वालू समुद्र तट की ओर लौटने लगा। समुद्र तट पर पहुचने पर उसे एक और धक्का लगा। उसकी नाव एक चट्टान से टकराकर टूट गयी थी।

कहा तो वालू लौटने की तैयारी कर रहा था, कहा अब उसे द्वीप मे ही रहने के लिए विवश होना पड गया। कुछ देर तक वह डरा-डरा-सा खडा रहा, पर सहसा उसे ध्यान आया कि इस तरह हाथ पर हाथ रखकर बैठने से कोई लाभ न होगा। उसने सोचा कि कही से कोई औजार मिल जाए तो नाव को ठीक किया जा सकता है।

अगले पल ही वालू को अपने विचार पर हँसी आ गई। भला समुद्र तट पर कोई औजार कहा से आता। फिर उसने सोचा, नरभक्षियो के देवता के पास शायद कोई औजार या चाकू पडा हो। वह फिर से उस भयानक स्थान की ओर चल पडा।

वहा सब-कुछ पहले जैसा ही सुनसान और वीरान था। वालू फौरन चबूतरे के पास पहुचा और वहा पडे ककालो के ढेर मे कोई औजार ढूढने लगा। कुछ देर की खोज के बाद उसे एक लम्बा-सा चाकू मिल गया। वालू को ऐसा लगा, मानो कोई बहुत बडी नियामत मिल गयी हो। चाकू को हाथ मे पकडते ही उसने एक अजीब-सी शक्ति अनुभव की। उसे लगा, अब वह हर खतरे का सामना कर सकता है।

नरभक्षियो के द्वीप मे रहते-रहते वालू को तीन दिन हो गये। इस बीच उसने अपने चाकू की सहायता से कई मछलियो का शिकार किया। कुछ जगली पशु भी मारे। वालू को मछलियो के शिकार मे बहुत मजा आता था। वह चाकू लेकर समुद्र मे कूद जाता, और बडी-बडी मछलियो को फुर्ती से मार डालता।

सामान तो द्वीप मे ही छूटा जा रहा है। इतने दिनो मे बालू ने बहुत सामान इकट्ठा कर लिया था। इसमे तरह-तरह की मछ-लियो के ढाचे थे। तट पर मिलने वाली दुर्लभ सीपिया और कौडिया थी। वह नाव को एक चट्टान के सहारे अटकाकर पानी मे कूद पडा।

धरती पर पहुचते ही उसे ध्यान आया कि नरभक्षियो के देवता के चबूतरे पर कीमती हाथीदात और 'चमकने वाले पत्थर पडे है, उन्हे भी ले लिया जाए तो मजा रहेगा। वह चबूतरे की ओर दौड पडा।

वहा अभी सब कुछ सुनसान था। पर ढोल-नगाडो की आवाज से सारा वातावरण बदला-बदला-सा नजर आ रहा था। बालू उछलकर चबूतरे पर चढ गया। उसने मुट्ठी भर चम-कीले पत्थर उठाकर कमर मे खोस लिये। इसके बाद उसकी नजर हाथीदातो पर पडी। उसने चार-छ बडे-बडे हाथीदात उठाये और कधे पर रखकर समुद्र तट की ओर लौटने को हुआ।

इसी समय बालू के कानो मे नगाडो के तेज स्वर गूज उठे। इसके साथ ही कई लोगो का एक मिला-जुला कठ-स्वर भी सारे वातावरण को कपा गया। क्षणभर के लिए बालू डर-कर ठिठक गया। उसे लगा, शायद नरभक्षी तट पर आ पहुचे है।

बालू की आशका सच थी। जब वह समुद्र तट पर पहुचा तो उसने देखा नरभक्षियो की नावे तट पर लग चुकी थी और हाथो मे बरछिया पकडे नरभक्षियो की टोलिया की टोलिया उनमे से उतर रही थी। नरभक्षियो का रग काला था और वे कमर मे बडे-बडे पत्तो से बनाये गये कपडे बाधे थे। उनकी

गालों पर रोटियाँ लगी थीं और गलों में हड्डियों की मालाएँ पड़ी हुई थीं। वे बहुत भयानक दिखायी दे रहे थे। कुछ नर-भक्षियों ने अपने चेहरे भी रंगे हुए थे, जिससे वे और भी डरा-वने मालूम पड़ रहे थे।

यह दृश्य देखकर बालू की साँस थमी-की-थमी रह गयी। उसने घबराकर अपनी नाव की ओर देखा, पर उसका कहीं पता नहीं था। अब तो बालू का दिल बैठने लगा। उसे अपने जीवन का अन्त निकट मालूम पड़ा। उसने सोचा, अब शीघ्र ही नरभक्षियों को उसका पता पड़ जाएगा और वे सब उस देवता के सामने उसकी बलि चढ़ा देंगे। इस विचार ने बालू को और भी डरा दिया।

सहसा उसे मोती का ख्याल आया। 'मोती कहाँ गया?' उसने सोचा। मोती की रक्षा का विचार आते ही बालू अपना सारा दुःख और दर्द भूल गया। अपने सिर पर चील-सी मँडराने वाली मौत को भी बालू भूल गया। चट्टानों के पीछे लुकते-छिपते वह दबे पाँव समुद्र की ओर बढ़ा।

इस बीच नरभक्षी उतर-उतरकर तट की ओर बढ़ने लगे थे। बालू समझ गया, अब वे सब चबूतरे की ओर जाएँगे। वह एक चट्टान की आड़ में छिप गया।

थी तथा उसके पास ही मोती भी चुपचाप एक चट्टान की आड मे छिपा बैठा था।

मोती को देखकर बालू को जैसे बहुत बडी शक्ति मिल गयी। वह पानी मे उतर गया और नाव सीधी करने की कोशिश करने लगा।

सहसा बालू के कानो मे नगाडो के तेज स्वर सुनाई पडे। वह चौक उठा। उसे लगा, जैसे नरभक्षी उसी की ओर आ रहे है। वह फौरन अपनी नाव पर उछलकर जा बैठा और तेजी से पतवार चलाने लगा।

बीच-बीच मे बालू मुड-मुडकर पीछे भी देखता जाता। द्वीप पर अभी तक कोई नही दिखायी दिया था। सूने तट को देखकर बालू मे जैसे अपने-आप शक्ति भरी जा रही थी।

नरभक्षियो द्वारा पीछा

बालू काफी दूर निकल आया था। वैसे तट अभी भी दिखायी दे रहा था, पर प्रतिपल उसका आकार छोटा होता जा रहा था।

सहसा बालू को लगा कि जैसे तट पर कुछ लोग आ पहुचे हो। वह और तेजी से नाव चलाने लगा।

सचमुच, उधर द्वीप के तट पर नरभक्षी आ पहुचे थे। उन्होने जब अपने देवता के पास रखी चीजे अस्त-व्यस्त देखी तो उनका मन सशकित हो उठा। पहले तो उन्हे लगा कि जैसे किसी जगली जानवर ने देवता की चीज़े फैला दी है, पर जब उन्हे देवता का चाकू भी नजर न आया तो उनका माथा ठनका

आ— ने मन इतनिया बनाकर चोर की तलाश में निकल पड़े। उन्हें विश्वास था कि चोर अभी द्वीप में ही होगा और कहीं नहीं गया होगा।

उन्होंने द्वीप का कोना-कोना छान मारा, पर जब उन्हें कहीं चोर का पता नहीं चला तो वे सब तट की ओर दौड़े। अचानक एक नरभक्षी की नजर बालू की नाव पर पड़ी। उसने चिल्लाकर अपने साथियों का ध्यान दूर एक काले धब्बे सी दिखायी देने वाली नाव की ओर बढ़ाया। नरभक्षियों को निर्णय करने देर न लगी। वे सब अपनी-अपनी नावों में बैठकर बालू की नाव का पीछा करने लगे। वे चीख रहे थे, चिल्ला रहे थे, और तेजी से पतवार चला रहे थे।

उधर बालू को भी जैसे इस खतरे का आभास हो गया था। उसने भी नाव तेजी से चलानी शुरू कर दी।

चारों ओर अथाह समुद्र लहरा रहा था। जहाँ तक नजर जाती थी, पानी-ही-पानी दिखायी दे रहा था। उधर नर-भक्षियों की नाव प्रतिपल पास आती जा रही थी। अब उन्हें बालू की नाव भी साफ-साफ दिखाई देने लगी थी। नाव में केवल एक छोटे-से लड़के को बैठा देखकर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा था। उनका विश्वास था कि अब वे बालू को जब चाहें पकड़ लेंगे। इस विश्वास ने उनके हाथ ढीले कर दिए और वे कुछ सुस्ताने-से लगे।

नरभक्षियो को इतने पास देखकर वालू का साहस छूटने लगा, पर वह किसी तरह पतवार चलाता ही रहा।

उधर नरभक्षी जैसे वालू की यह दशा ताड गये थे। वे उसे चूहे के समान डरा-डराकर मारना या पकडना चाहते थे। पर वालू भी अपनी अन्तिम सास तक उनसे बचने का जैसे प्रण कर चुका था। वह बेहद थक चुका था, फिर भी हिम्मत के साथ पतवार खेता जा रहा था। मोती भी जैसे वालू पर आये सकट को भाप गया था। वह चुपचाप मूर्ति की तरह बैठा वालू को एकटक ताक रहा था।

धीरे-धीरे साझ घिरने लगी। यह देखकर वालू की हिम्मत दुगुनी हो उठी। उसने सोचा, रात के अधकार मे नरभक्षी उसका पता नही लगा पाएगे। नरभक्षी भी इस खतरे को भाप गये थे। वे अब सारा खेल खत्म कर देना चाहते थे। उन्होने एक बार जोरो की आवाज की और फिर जैसे चीते के समान वालू की ओर लपक पडे।

वालू क्षणभर के लिए स्तम्भित रह गया। उसे सूझ ही नही पडा कि वह क्या करे। उसे लगा, जैसे चारो ओर से नर-भक्षियो का जाल धीरे-धीरे कसता जा रहा है। सचमुच नर-भक्षी उसके काफी पास आ गये थे। एक नरभक्षी तो वालू की ओर निशाना ताककर भाला चलाने की तैयारी कर रहा था। उस पर वालू की नजर पडी तो वह सन्न रह गया।

उसने ढलते हुए सूरज की ओर देखा। रात का अधियारा घिरने मे अभी थोडा समय बाकी था। वालू ने मन-ही-मन एक योजना बनायी और फिर पतवार नाव मे फेक छपाक से पानी मे कूद पडा।

बालू को पानी मे कूदता देखकर नरभक्षी भौचक्के रह गये। उन्होने तेजी से पतवार चलाना शुरू कर दिया। उधर बालू पानी मे भीतर ही भीतर डुबकी लगाता हुआ नरभक्षियो की नावो की ओर ही बढने लगा। उसके दातो मे चाकू दबा हुआ था। एक दृढ विश्वास के सहारे वह एक बहुत बडा खतरा मोल लेने जा रहा था। पर उसे विश्वास था कि चतुराई के बल पर वह अकेला ही उन सब नरभक्षियो से जूझ सकेगा।

सहसा बालू ने पानी के भार को ज्यादा अनुभव किया। वह समझ गया कि नरभक्षियो की नावे आसपास ही कही हैं। उसने दाँतो मे दबा चाकू निकाल लिया और ऊपर की ओर उठने लगा।

जब बालू पानी के ऊपर आया तो उसने देखा, नरभक्षियो की आखिरी नाव बढी चली जा रही है। वह तेजी से तैरता हुआ उसकी ओर बढा। नाव के पास जाकर उसने डुबकी लगायी। वह चाकू से नाव के पेंदे मे छेद करना चाहता था।

पर इसी बीच एक घटना घट गयी। नरभक्षियो के सामने एक और बडा सकट मुह बाकर खडा हो गया था। अब उनकी अपनी जान के लाले पड गये थे।

नरभक्षियो को समुद्र मे आती एक बडी नौका दिखायी पड गयी थी। उसके हरे पाल को वे अच्छी तरह पहचानते थे। उन्हे मालूम था कि हरे पाल वाली नाव मे उनसे भी खूंखार लोग सफर करते हैं। उनके पास तीर-तलवार-भाले ही नहीं, आग उगलने वाली नलिया भी होती हैं। उन्होने नगाडे बजाना बद कर दिया और अपने द्वीप की ओर लौटने को हुए।

बालू ने यह सब देखा तो धीरे-धीरे अपनी नाव की ओर

बढने लगा। अब नरभक्षियो का ध्यान उसकी ओर नही था। वे अपनी जान बचाने मे लगे हुए थे। कुछ ही देर मे बालू अपनी नाव के पास पहुच गया। अभी नाव पर चढना खतरे से खाली नही था। वह नाव पकडे-पकड़े तैरने लगा।

सहसा बालू ने देखा, कोई चीज सनसनाती हुई उसके पास से गुजरी और अगले ही पल एक नरभक्षी चिल्लाकर पानी मे गिर पडा। अब बालू की नजर भी हरे पाल वाली नाव पर गयी।

उसने देखा, हरे पाल वाली नाव बहुत बडी है। उस पर बहुत सारे लोग हथियार लिये खडे हुए है। बालू अपनी नाव की आड मे हो गया।

उधर नरभक्षियो मे भगदड मची हुई थी। वे तेजी से चप्पू चलाते हुए बढे आ रहे थे। बालू ने देखा कि हरे पाल वाली नाव की रफ्तार बडी तेज है वह बात की बात मे बिलकुल पास आ पहुँची है।

नरभक्षी भी जान गये कि अब भागना मुश्किल है, वे भी रुककर लोहा लेने को तैयार हो गये। अब तक चुपचाप उनके नगाडे भी फिर से एकाएक गूजने लगे।

हरे पाल वाली नाव से भी फिर से आवाज आने लगी।

उधर सूरज समुद्र मे डुबकी लगा चुका था। रात का अधकार सारे सागर पर उतर चुका था। एकाएक हरे पाल वाली नाव मशालो की रोशनी से जगमगा उठी। उनके प्रकाश मे नरभक्षियो का समूह और भी भयानक लगने लगा।

अब दोनो पक्षो मे जैसे लडाई शुरू हो गयी थी। नरभक्षी अपने भाले तान-तानकर हरे पाल वाली नाव की ओर फेक

रहे थे। उधर हरे पाल वाली नाव से भी तीरों और भालों की बौछारों के साथ-साथ बन्दूक की गोलियां आने लगी थीं।

अपनी नाव की आड़ में दुबका-दुबका बालू यह सब फटी-फटी आंखों से देख रहा था।

अब हरे पाल वाली नाव से जलती हुई मशालें नरभक्षियों की ओर फेंकी जाने लगी थीं। नरभक्षी उनसे बचने की कोशिश कर रहे थे, पर बच नहीं पा रहे थे। अन्त में वे सब पानी में कूद पड़े और तैरते-तैरते हरे पाल वाली नाव की ओर बढ़ने लगे। हरे पाल वाली नाव के लोग भी अगला खतरा भांप गये थे। वे नरभक्षियों का सामना करने के लिए तैयार हो गये।

युद्ध जैसे थम गया था। बालू भी लपककर अपनी नाव में बैठ गया था।

तभी उसने देखा कि हरे पाल वाली नाव के पास घमासान युद्ध छिड़ गया है। नरभक्षी नाव में चढ़ने की कोशिश कर रहे थे और नाववाले उन्हें गोलियों से भून रहे थे। भालों-तलवारों से मौत के घाट उतार रहे थे। यह दृश्य देखकर बालू सिहर उठा।

एकाएक हरे पाल वाली नाव का बड़ा पाल धू-धू कर जल उठा। शायद किसी चालाक नरभक्षी ने उसमें मशाल से आग लगा दी थी।

अब तो हरे पाल वाली नाव पर भी जैसे भगदड़ पड़ गयी। लोग छोटी-छोटी नौकाओं में बैठकर समुद्र में उतरने लगे।

रात के अंधकार में समुद्र की छाती पर जलती हुई नाव बड़ी भयानक लग रही थी।

बालू को कुछ सूझ नहीं रहा था। वह थककर चूर-चूर हो उठा था। उसने अपने को सम्भालने की बहुत कोशिश की,

पर संभाल न पाया और एक ओर लुढक गया।

समुद्री लुटेरो का साथ

बालू न जाने कितनी देर इसी अवस्था मे पडा रहता, पर एक भयानक विस्फोट से उसकी आख खुल गयी। वह चौंककर उठ बैठा।

उसने देखा, हरे पाल वाली नाव टुकडे-टुकडे होकर बिखर गयी है। समुद्र के पानी मे यहा-वहा जलती हुई लकडिया तेजी से बुझती जा रही है।

रात का गहरा अधकार अभी भी छाया हुआ था। कभी-कभी रोशनी का एक गुब्बारा-सा फूटता और उसके प्रकाश मे बालू को आस-पास तैरते लोग और नौकाएँ दिख जाती।

सहसा बालू को अपनी नाव के पास एक नरभक्षी तैरता हुआ दिखायी दिया। बालू पहले तो डरा, फिर उसे उस नरभक्षी पर दया आ गयी। उसने नरभक्षी की ओर अपनी पतवार बढा दी। अगले ही पल बालू को एक झटका लगा और उसकी छोटी-सी नाव डगमगा गयी। बालू को लगा कि जैसे किसी ने नाव को थाम लिया है। अगले पल ही कोई उछलकर नाव मे आ गिरा।

बालू चौंक उठा। नाव मे आ गिरने वाला नरभक्षी ही था, पर अब उसकी आखो मे भयानक इरादे नही झाक रहे थे। वे करुणा की भीख माग रही थी। बालू को उस सकट मे भी हँसी आ गयी।

इसी बीच उस नरभक्षी ने बालू के हाथ से पतवार ले ली और स्वयं खेने लगा। आसपास अभी भी नावें मौजूद थीं। उनमें बैठे लोग धीरे-धीरे अपनी चेतना, अपना साहस प्राप्त कर रहे थे। एकाएक एक नाव में बैठे कुछ लोगों की नजर बालू की नाव पर पड़ी। एक नरभक्षी और एक कुत्ते के साथ एक छोटे-से लड़के को बैठा देखकर वे चौंक उठे। उन्होंने अपने अन्य साथियों को आवाज लगायी।

धीरे-धीरे बालू की नाव घेर ली गयी।

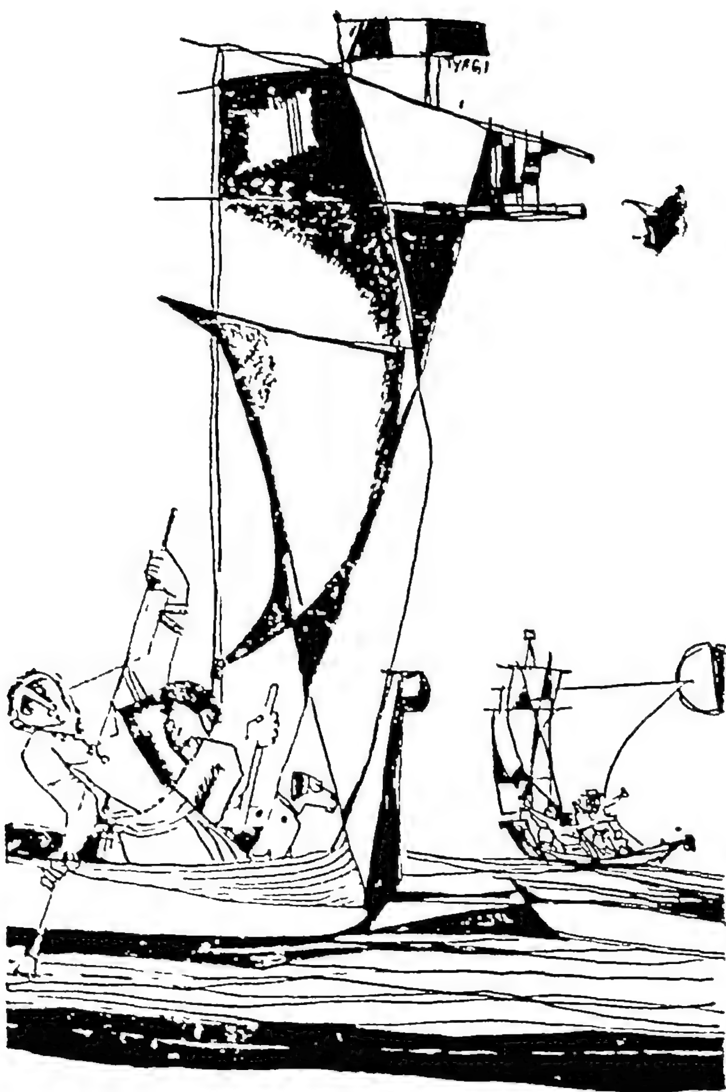
उस समय तक आसमान पर सुबह की सफेदी छाने लगी थी। सुबह के धुंधलके में बालू ने नाववालों की ओर देखा और उन्होंने उसे।

एक नाव बालू की नाव से आकर लग गयी। उसमें से कुछ व्यक्ति बालू की नाव पर कूद पड़े। नाव उनका भार न संभाल सकी और डगमगाने लगी। यह देखकर वे लोग फिर अपनी नाव में कूद गये।

उनमें से एक व्यक्ति ने बालू से कहा—'अपनी नाव को हमारी नावों के साथ-साथ ले चलो। कोई चालाकी की तो मौत के घाट उतार दिये जाओगे।"

बालू ने कोई उत्तर न दिया। वह चुपचाप नाव खेता रहा।

नावों का काफिला धीरे-धीरे बढ़ने लगा। बालू थककर चूर-चूर हो चुका था। उससे पतवार खेते नहीं बन रहा था। यह देखकर एक नाव में बैठे कुछ लोगों ने उसे और मोती को अपनी नाव में बैठा लिया। नरभक्षी को दूसरी नाव में चढ़ा दिया गया।



धीरे-धीरे बालू को पता चला कि नाव मे बैठे लोग कौन थे। वे सब समुद्री लुटेरे थे। समुद्र मे आते-जाते व्यापारी जहाजो को लूटना उनका काम था। वे नरभक्षियो की तलाश मे भी रहते थे क्योकि उनके पास से उन्हे कीमती पत्थर और हाथीदात मिल जाया करते थे। लुटेरो का असली परिचय पाते ही बालू ने अपनी कमर मे बाधकर रखे गये पत्थरो को टटोला। वे अपनी जगह सुरक्षित थे। यह देखकर बालू ने चैन की सास ली।

उधर नावो के काफिले मे एकाएक बडी हलचल-सी मच गई। दूर सामने एक बहुत बडा जहाज आता दिखायी दे रहा था। सूरज के प्रकाश मे बालू ने देखा कि उस जहाज पर एक हरा झडा लहरा रहा है। वह चौक उठा।

उधर नाववाले खुशी मे चिल्लाने लगे थे। उन्हे पता चल गया था कि शीघ्र ही वे सुरक्षित स्थान पर पहुच जाएँगे। हालाकि बालू को इसमे कोई वास्ता नही था, फिर भी उसे लग रहा था कि जो हो रहा है, ठीक ही हो रहा है।

दो-तीन घटे बाद नावो का काफिला बडे जहाज के पास पहुँच गया। जहाज मे एक सीढी पानी मे लटकायी गयी और एक-एक कर सभी व्यक्ति जहाज पर चढने लगे। मोती को गोद मे लिये बालू को भी चढना पडा। उसके पीछे-पीछे नरभक्षी भी आया। जहाज पर चढने के बाद बालू और नरभक्षी को तत्काल कप्तान के पास ले जाया गया। वही उस दल का सरदार भी था।

कप्तान की बडी-बडी लाल आखे देखकर बालू सिहर उठा। पर कप्तान के मीठे स्वर मे उसे ढाढस बधा।

उसने वालू से उसका अता-पता पूछा। वालू ने उसे शुरू से अन्त तक की सारी घटना सुना दी। उसकी कहानी सुनकर कप्तान खिल-खिलाकर हंस पडा। वोला—"तो तुम एक वहादुर वेटे हो। मुझे तुम जैसे वच्चे की ही तलाश थी। आज से तुम अपना गाव, अपना घर भूल जाओ। अव इसी जहाज को अपना घर, गाव समझो।" फिर वह कोमल स्वर मे वोला—"वेटे, मेरा भी इस दुनिया मे कोई नही है। मैं आज से तुम्हे अपना बेटा समझूगा, तुम मुझे अपने पिता जैसा समझो या न समझो।"

कप्तान की वाते सुनकर वालू का मन भर आया। उसे कुछ सूझ नही पडा कि क्या कहे। उसके हाथ अपने-आप कमर पर चले गये। उसने कमर मे वधे कीमती पत्थर निकाले और कप्तान की मोटी और खुरदरी हथेली मे थमा दिये।

वे पत्थर देखकर कप्तान की आखे अचरज से फट गयी। वह चीख-सा उठा—"हीरे! इतने कीमती हीरे!"

फिर उसने वालू को गोद मे उठा लिया।

एक नयी जिन्दगी

लुटेरो के जहाज पर वालू की उसे एक नयी जिन्दगी शुरू हुई। उतने बडे जहाज मे वही एक अकेला बच्चा था, इसलिए सभी उसे बहुत प्यार करते थे। मोनो भी उनके लिए एक खिलौना सिद्ध हुआ था। सरदार ने नरभक्षी को भी काम पर लगा दिया था। पहले-पहले तो वालू को जहाज की जिन्दगी बहुत अखरी।

कभी उसे अपने पिता की याद आती, कभी गाव की। कभी उसकी आखो के सामने बाज्या का चित्र घूम जाता। बालू को कान्हा की भी याद आती।

ऐसे क्षणो मे बालू उदास हो जाता और मोती को गोद मे बैठाकर समुद्र की छोटी-बडी लहरो को देखने लगता।

लुटेरो का सरदार बालू को बहुत प्यार करने लगा था। जब वह उसे उदास देखता तो पास बैठाकर तरह-तरह की कहानिया सुनाने लगता। ये कहानिया असल मे उसके जीवन की सच्ची घटनाए होती। पर कभी-कभी इन कहानियो को सुनकर भी बालू का बेचैन मन शान्त नही होता और वह फफक-फफककर रोने लगता।

एक दिन जब बालू अपने गाव-घर की याद मे खोया अकेले मे सिसक रहा था, तभी किसी ने आकर उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरा। बालू ने चौंककर सिर उठाया तो देखा सरदार खड़ा था। उसकी आखो मे भी आसू झलक रहे थे। उसने बालू से कहा—"बालू, आओ, आज तुम्हे एक ऐसी कहानी सुनाऊ, जिसे सुनकर तुम ज़िन्दगी मे फिर कभी नही रोओगे।" सरदार की बातो मे जैसे जादू था। बालू ने अपने आसू पोछे और सरदार के पीछे हो लिया।

सरदार जहाज के मस्तूल के पास जाकर रुक गया। मस्तूल के मोटे डडे के साथ-साथ एक रस्सी की सीढी बधी हुई थी।

सरदार सीढियो पर चढने लगा। उसने बालू को भी पीछे-पीछे आने का सकेत किया।

बालू पहले तो झिझका, फिर किसी तरह सरदार के पीछे-

पीछे सीढिया चढने लगा। कुछ देर बाद दोनो एक छोटे से कमरे मे जा पहुचे। कमरे के बीचोबीच एक मेज़ पडी थी। एक कोने मे एक लम्बी-सी दूरबीन लटक रही थी।

सरदार ने दूरबीन उठायी और उसे बालू के हाथो मे थमाते हुए बोला—"इसे आख के सामने रखकर जरा बायी ओर देखो।"

बालू ने आखो के सामने दूरबीन रखी तो चौक पडा। दूर, बहुत दूर उसे एक लम्बी काली लकीर-सी नजर आ रही थी।

सरदार ने बालू से कहा—"बेटा बालू, तुम नही जानते। समुद्र के उस पार और भी बहुत बडी जमीन है जिस पर कई छोटे-छोटे देश बने है। कुछ देशो मे ऊचे-ऊचे पहाड है तो कुछ देशो मे रेत के अम्बार। यहा रहने वाले लोग समुद्र की छाती चीरते हुए हिन्दुस्तान पहुचते है। वहा से वे मिर्च-मसाले लाकर यहा बेचते है। हिन्दुस्तान मे ढाका नामक एक जगह है। वहा का कपडा बडा मजबूत और अच्छा होता है। थान-का-थान कपडा एक छोटी-सी अगूठी से निकल जाता है। मैं बचपन मे सुना करता था कि मिस्र के राजाओ की ममियो के लिए हिन्दुस्तान से ही कपडा मगाया जाता था।

मैं बचपन से ही ये चीजे देखता आया हू। मेरे पिता एक बडे समुद्री व्यापारी थे। वे एक बडे जहाज मे नमक की बोरिया, रेशमी कपडो के थान, बडी बोतलो मे फारस का गुलाब-जल भरते और हिन्दुस्तान मे जाकर बेचते। कभी-कभी वे अरबी घोडे भी हिन्दुस्तान ले जाते।

मैं भी एक बार अपने पिता के साथ हिन्दुस्तान गया था। वहा हम कारोमडल नाम की जगह ठहरे थे। वहा का राजा

मेरे पिता का बहुत सम्मान करता था।

एक बार मेरे पिता अपने जहाजी बेडे मे सामान भरकर हिन्दुस्तान से लौट रहे थे। रास्ते मे उन्हे एक जहाज आता हुआ मिला। उस जहाज के झडे को देखते ही मेरे पिता खुशी मे उछल पडे। वह उनके एक गहरे दोस्त का जहाज था। जब दोनो जहाज पास आये तो लगर डाल दिये गये। मेरे पिता एक नाव मे बैठकर उस जहाज मे गये। मैं भी उनके साथ था। पिता के दोस्त ने मुझे देखते ही गोद मे उठा लिया। मैं उन्हे चाचा कहा करता था।

मैने उनसे पूछा—'चाचा, आप कहा जा रहे है ?'

उन्होने उत्तर दिया—'बेटा, इस बार तो बहुत दूर तक सफर करने का इरादा है। पहले कारोमडल जाऊगा। फिर वहा से हेलीद्वीप मे इलायचिया खरीदकर देश के लिए रवाना करूगा। फिर सरन द्वीप होता हुआ कामरूप को निकल जाऊगा।'

समुद्री यात्रा करने मे मुझे बडा मजा आता था। मैने अपने पिता से उनके साथ जाने की अनुमति मागी। पिता पहले तो तैयार नही हुए, पर जब चाचा ने भी बहुत जोर दिया तो वे तैयार हो गये। उन्होने चाचा से कहा—'सुलेमान, मैं तुम्हे अपने जिगर का टुकडा सौंप रहा हू। इसे सभालकर रखना।'

चाचा ने मुझे अपनी बाहो मे लेते हुए कहा—'तुम जरा फिक्र न करो।"

इस तरह मैं पिता का साथ छोडकर एक लम्बे सफर पर निकल पडा।

कुछ महीनो बाद हम कारोमडल पहुचे। कारोमडल मैं पहले भी देख चुका था। कारोमडल मे हम हेलीद्वीप गये। वहा

चारो ओर खुशबू-ही-खुशबू थी। चाचा ने बतलाया कि यहा एक बहुत छोटा फल होता है, जो सूखने पर खाने मे बडा जायकेदार लगता है। इसे इलायची कहा जाता है। अपने देश मे इसकी बडी माग है। यहा हमे यह मिट्टी के मोल मिल जाती है।

जब इलायचियो से लदे जहाज रवाना हो गये तो चाचा अपने जहाज मे सरन द्वीप की ओर बढे।

मुझे जहाजी सफर मे बडा मजा आ रहा था। दिन बहुत हँसी-खुशी से गुजर रहे थे। अचानक एक रात मेरी इस खुशी पर पाला पड गया।

खून, खून और खून।

मैं गहरी नीद मे सोया था। सहसा हल्ले-गुल्ले से मेरी नीद खुल गयी। मैं आख मलते हुए उठ बैठा। अभी मैं पूरी तरह सभल भी न पाया था कि एक चीख सुनकर सिहर उठा। मैं फौरन उठकर बाहर आया।

बाहर आया तो मशाल की रोशनी मे देखा कि लोग तलवारे निकालकर लड रहे है। मैं एक कोने मे दुबक गया। मेरी कुछ समझ मे नही आ रहा था। पहले तो सोचा, शायद लुटेरो ने जहाज पर हमला कर दिया है क्योकि उन दिनो भी आज की भाति लुटेरे जहाजो पर हमला कर उन्हे लूट लिया करते थे।

मैं कोने मे दुबका रहा। थोडी देर बाद लडाई खत्म हो

गयी और वह स्थान सुनसान हो गया। मैं फौरन सुलेमान चाचा के कमरे की ओर भागा।

कमरे के भीतर पहुचते ही मैं चीखकर रुक गया। सामने सुलेमान चाचा की लाश पडी थी। उनके सीने मे खजर घुसा हुआ था। पल भर के लिए मेरी आखो के सामने अधेरा छा



गया। मैं गिरने को हुआ, तभी किसी ने मुझे थाम लिया। कोई मेरे कानो मे धीमे से कह रहा था—"बेटा, हिम्मत रखो। तुम्हे अपने चाचा के खून का बदला लेना है।"

मैंने देखा तो चाचा का विश्वासपात्र नौकर अब्दुल खडा था। उसने मुझे हिम्मत बधाते हुए कहा—"छोटे सरकार, खूनी इसी जहाज मे है। और वह अकेला भी नही है। उसके साथ कई लोग हैं। वह चतुर भी है और धोखेबाज भी।"

मैंने अपने-आप पर काबू रखकर पूछा—"कौन है खूनी ? कहा छिपा है वह ? कौन है उसके साथ ?"

अब्दुल ने कहा—"छोटे सरकार, अभी यहा से निकल चलिए। हो सकता है, वह आप पर भी वार कर दे। मेरी राय तो यह है कि हमे यहा से निकल भागना चाहिए।"

मेरी समझ मे कुछ नही आ रहा था। फिर भी मैं अब्दुल के पीछे हो लिया। अभी हम लोग बाहर भी नही निकल पाये थे कि कुछ लोगो ने हमारे मुह पर कपडा डाल दिया। उस कपडे मे जाने क्या था, मुह पर पडते ही मैं बेहोश हो गया।

जब आख खुली तो मैंने अपने को एक कमरे मे पाया। अब्दुल भी पास पडा हुआ था। उसके हाथ-पैर बँधे हुए थे। उसने इशारे से मुझे अपने पास बुलाया।

मैं स्वतन्त्र था, इसलिए फौरन उसके पास चला गया। अब्दुल ने मुझे और पास आने के लिए कहा। जब मैं उसके एकदम पास पहुच गया तो वह बोला—"छोटे सरकार, मेरे मालिक और तुम्हारे चाचा सुलेमान का खून सलीम खा ने किया है।

उसने मे तुम्हारे चाचा के पास लालरूप मे गटे किसी

खजाने का एक नक्शा था। सलीम ने उसके लालच में ही उनका खून कर दिया है। अब शायद मेरी बारी है।"

थोड़ा रुककर अब्दुल ने कहा—"पर तुम कसम खाओ, कभी न कभी अपने चाचा की मौत का बदला जरूर लोगे।"

मैंने कहा—"अब्दुल, तुम निश्चित रहो। मैं जरूर अपने चाचा की मौत का बदला लूगा। और मैं तुम्हे भी मरने नही दूंगा।"

यह सुनते ही अब्दुल की आखे चमक उठी पर वह बोला—"छोटे सरकार, यह नामुमकिन है।"

मैंने कहा—"नही। यह बहुत आसान है। मैं तुम्हारे हाथ-पैर खोले देता हू। अभी रात का एक पहर बाकी है। तुम पानी मे कूद जाओ। यहा से हेलीद्वीप ज्यादा दूर नही है। अगर तुम दो-तीन घटे तैर लोगे तो वहा पहुच जाओगे।"

"नही, अब्दुल को इस तरह भगाने की जरूरत नही। हम यही रहकर सलीम का मुकाबला करेगे।" किसी ने पीछे से कहा।

मै चौंक उठा। अब्दुल भी चौंककर उठने की कोशिश करने लगा। मैंने घूमकर देखा तो जहाज का कप्तान खडा था। उसने मुझे कहा—"बेटा, सलीम ने तुम्हारे चाचा को धोखे से मारा है, तुम भी उसे धोखे से मारने मे हमारी सहायता करो।"

फिर उसने एक पुडिया मेरे हाथो मे देते हुए कहा—"इसमे एक सुई है। इसे तुम किसी तरह सलीम को कही भी चुभो दो। अगले ही क्षण उसके प्राण-पखेरू उड जाएगे।"

मैंने अब्दुल की ओर देखा। फिर कापते हाथो मे पुडिया ले ली।

तभी कप्तान ने कहा—"हमे देर नही करनी चाहिए। अभी सलीम सो रहा है। तुम बेधडक उसके कमरे मे चले जाओ। कोई भी तुम्हे नही रोकेगा। बस जाते ही यह सूई सलीम को चुभो देना।"

इतना कहकर वह मुझे बाहर ले गया।

मैंने कप्तान के बताये अनुसार ही काम किया। बदले की भावना से मेरा रोम-रोम जल रहा था। सलीम के कमरे मे जाते हुए किसी ने भी मुझे नही टोका। फिर तो काम आसान था। सलीम गहरी नीद मे सोया हुआ था। मेरे सूई चुभाते ही एक चीख-सी उसके मुह से निकली और फिर उसका सिर एक ओर लुढक गया।

मैं फौरन कमरे के बाहर निकल आया। किसी को जरा सन्देह भी नही हुआ कि सलीम की हत्या कर दी गयी है।

मैं अपने कमरे मे लौट आया। अब्दुल अभी भी बधा पडा था। आते ही मैंने उसके बधन खोले और सारी बात बतायी।

सुनते ही अब्दुल गभीर हो गया। वह फुसफुसाकर बोला—'मुझे तो कप्तान पर भी शक हो रहा है।'

मैंने कहा—'हम सुबह का इन्तजार करे। देखे क्या होता है।'

सुबह हुई और अब्दुल की आशका सच निकली। कप्तान ने सलीम की हत्या की खबर पूरे जहाज मे फैला दी थी। हर जुबान पर मेरा नाम था। लोग कह रहे थे कि मैंने अब्दुल के कहने से आकर सलीम का खून कर दिया है।

अब्दुल ने सुना तो गभीर होकर बोला—'मैं कहता था न। यह कप्तान बहुत बदमाश है। पहले तो उसने सलीम से मिलकर

तुम्हारे चाचा का खून करवाया, फिर तुम्हे जहरीली सूई देकर सलीम को मरवाया। अब वह हम दोनो को भी रास्ते मे हटाना चाहता है। पर मैं उसकी एक नही चलने दूंगा। मैं अभी जाकर सलीम के साथियो से मिलता हू।"

इतना कहकर अब्दुल बाहर निकल गया। मै कमरे मे अकेला ही रह गया।

कुछ ही पल बीते होगे कि कप्तान कुछ लोगो के साथ आ धमका। आते ही उसने मुझे गिरफ्तार कर लिया और बोला—"तुम्हारे बुरे काम की तुम्हे अभी सजा दी जाएगी।"

फिर उसने मुझसे पूछा—"तुम्हारे कान भरने वाला वह अब्दुल कहा है ?"

मै चुप रहा। यह देखकर कप्तान झल्ला गया। वह चीखते हुए बोला—"मत बताओ, मै खुद उसे ढूढ लूगा। अभी तुम तो चलो।"

इतना कहकर वह कमरे के बाहर चला गया। उसके पीछे-पीछे मुझे भी जाना पडा। मेरे पीछे और कई लोग चलने लगे।

बाहर बहुत मे लोगो की भीड खडी थी। सलीम के साथी तलवार निकाले सामने ही खडे थे। उन्हे देखते ही मै काप उठा। पर तभी सामने खडे एक व्यक्ति ने मुझे आख से इशारा किया। मै सतर्क हो गया।

उधर कप्तान ने लोगो से कहना शुरू किया कि इस लडके ने ही कल रात धोखे से सलीम को जहर की सूई चुभोयी है। पहरे पर तैनात आदमी का कहना है कि कल रात यही लडका सलीम के कमरे मे घुसा था।

फिर कुछ देर रुककर उसने कहा—"मेरी राय मे तो इस

लडके को अभी मौत के घाट उतार देना चाहिए।"

लोगो मे सन्नाटा छा गया। तभी सामने खडे सलीम के साथियो मे से एक व्यक्ति आगे लपका। उसने तलवार से कप्तान पर हमला करते हुए कहा—"हम जानते है, तुम्ही सलीम के असली हत्यारे हो। मौत के घाट यह लड़का नही, तुम उतरोगे।"

कप्तान क्षणभर के लिए घबरा गया। तलवार के वार से उसका दायां हाथ भी कट गया था। वह समझ गया कि उसका भाडा फूट गया है। पर वह भी गजब का हिम्मती था। उसने हारती हुई बाजी को सभालने की कोशिश की और अपने साथियो को ललकारा।

अब क्या था! जहाज पर भीषण युद्ध छिड गया। तलवारो की छपाछप की आवाजो मे लहरो का स्वर भी डूब गया। जहाज पर भयकर मारकाट मच गयी। एक ओर तो कप्तान के साथी थे और दूसरी ओर सलीम के। सुलेमान चाचा के साथी भी उनका साथ दे रहे थे।

जहाज मे चारो ओर खून-ही-खून नजर आ रहा था। मौका पाकर मैने वह जहरीली सूई समुद्र मे फेक दी और एक तलवार खीचकर लडाई मे शामिल हो गया।

लडाई मे कप्तान मारा गया। उसके गिरते ही उसके साथियो ने हार मान ली।

कुछ ही देर मे जहाज पर शाति छा गयी, पर यह शाति मरघट की शाति से भी अधिक भयानक थी।

अब्दुल के समझाने पर सलीम के साथियो ने मुझे अपना मुखिया बना लिया। मै चाहता था कि हम लोग कारोमडल

लौट जाए, पर सलीम के साथी नही माने। उन्होने कहा—"कारोमडल पहुचते ही हम पकड लिये जाएगे। वहा का राजा हमे फासी पर चढा देगा।"

अब्दुल को उनकी बात सही मालूम पडी। पर वे सब अपने देश भी नही लौट सकते थे। इसलिए निश्चित हुआ कि अब समुद्र ही उनका देश होगा, और जहाज ही उनका घर। वे आने-जाने वाले जहाजो को लूटेंगे और जिन्दगी के दिन गुजारेंगे।

इतनी कहानी सुनकर सरदार ने बालू से कहा—"बेटा, मैं उसी जहाज पर बडा हुआ। धीरे-धीरे मैं भी लुटेरा बन गया। मैंने जाने कितने जहाज लूटे, कितने लोगो को मौत के घाट उतारा। अब इस जिन्दगी से तग आ गया हू। क्या करु ? इस जहाजी बेडे की जिम्मेदारी भी निभानी है।"

बालू ने पूछा—"आप अपने घर क्यो नही गये ?"

सरदार ने भारी हृदय से उत्तर दिया—"घर पर भी कौन था ? बाद मे पता चला कि मेरे पिता के जहाज को भी लूट लिया गया और उन्हे सता-सताकर मारा गया। सच पूछो तो मै अपने पिता की मौत का बदला लेने के लिए ही समुद्र के रेगिस्तान पर दिन-रात पागलो की तरह भटका करता हू। मुझे विश्वास है कि एक-न-एक दिन मेरा सपना जरूर पूरा होगा।"

इतना कहकर सरदार ने दूरबीन उठा ली। उसने उसे आखो के सामने लगाकर चारो ओर देखना शुरू किया।

दूरबीन मे उसे दूर एक जहाज की पताका लहराती दिखायी दी। सरदार समझ गया कि कोई विदेशी व्यापारी जहाज आ रहा है। उसने फौरन मस्तूल मे लटकती एक रस्सी

खीच दी। रस्सी खीचते ही जहाज मे एक वडा घटा टनटनाने लगा। वालू ने देखा कि घटे की आवाज सुनते ही सारे जहाज मे तलहका-सा मच गया है। लोग काम छोड-छोडकर मस्तूल के नीचे आ खडे हुए हैं।

जव सब लोग एकत्र हो गये तो सरदार ने एक वहुत वडे भोपू को अपने मुँह के सामने रखकर कहना शुरू किया, "दोस्तो, एक जहाज वडी तेजी से इसी ओर वढा आ रहा है। यह जहाज कोई व्यापारी जहाज मालूम पड रहा है। आप सव लोग एक कडे मुकावले के लिए तैयार हो जाए।"

इतना कहकर सरदार ने फिर दूरवीन से देखा। कुछ देर तक वह आखे गडाये देखता रहा। फिर उसने गम्भीर स्वर मे कहना शुरू किया "दोस्तो, यह जहाज इधर का तो नही मालूम पडता। यह काफी वडा है। इसमे एक तोप भी लगी हुई है। वहुत पहले ऐसा जहाज मैंने एक वार कुस्तुन्तुनिया के वन्दरगाह मे देखा था। हमे वहुत सावधानी से काम लेना पडेगा।"

सरदार की वाते सुनकर चारो ओर गम्भीरता छा गयी। लोग चुप होकर सरदार की अगली वात सुनने की प्रतीक्षा करने लगे।

इधर सरदार आखो के सामने दूरवीन लगाये उसी जहाज की ओर देख रहा था।

सात समन्दर पार के लोग

सहसा सरदार ने मस्तूल पर सफेद झडा लहराने का आदेश

दिया। थोडी देर मे एक बहुत बडा सफेद झडा जहाज पर लहराने लगा। सरदार दूरबीन से अभी भी उस जहाज को देख रहा था। अब वह काफी नजर आने लगा था। उस जहाज की रफ्तार बडी तेज थी और सरदार को विश्वास हो गया था कि कुछ ही घटो के भीतर वह काफी पास आ जाएगा।

सरदार ने देखा कि सामने वाले जहाज पर भी सफेद झडा लहरा दिया गया है। उन दिनो यह नियम था कि सफेद झडा लहराने के बाद कोई जहाज किसी पर आक्रमण नही करता था। सामने वाले जहाज पर सफेद झडा लहराते देखकर सरदार ने चैन की सास ली और नीचे उतर आया।

नीचे जहाज के और लोग उसे घेरकर खडे हो गये। सरदार ने उन्हे बताया कि सामने वाले जहाज पर भी सफेद झडा लहरा दिया गया है। फिर उसने अपने एक साथी को बुलाकर कहा—"गुलशन, तुम फौरन तीन-चार साथियो के साथ एक छोटी नाव मे सवार हो जाओ और उस जहाज के कप्तान से मिलकर जरा उसके बारे मे पता लगाओ।"

गुलशन इस काम मे माहिर था। वह तुरन्त चार लोगो के साथ एक छोटी-सी नाव मे उतर गया और उस अजनबी जहाज की ओर बढ चला।

इधर सरदार ने सावधानी के लिए मोर्चाबन्दी पक्की कर ली। सबको अपना-अपना काम समझा दिया और फिर मस्तूल पर चढकर उस जहाज को देखने लगा।

बाल्लू की समझ मे कुछ नही आ रहा था। वह मोती को गोद मे लिये कभी इधर जाता, कभी उधर। धीरे-धीरे रात हो गयी। जहाज पर सब लोग खाने-पीने मे मशगूल हो

गये। वालू काफी थकान-थकान-सी महसूस कर रहा था। वह शीघ्र ही सो गया।

अगली सुबह वालू जब जागा तो उसने देखा जहाज पूरी रफ्तार से चला जा रहा है। जब वालू ने सरदार से उस जहाज के बारे मे पूछा तो उसे कई नई बातें पता चली। सरदार ने उसे बतलाया कि वह जहाज सात समुद्र पार बसे एक देश का है, उस देश का नाम पुर्तगाल है। वहा के रहने वाले पुर्तगाली कहलाते हैं। उन्हे पता चला है कि हिन्दुस्तान मे मोतियो की नदिया हैं, सोने के पहाड है और खुशबुओ के पेड है। वे चाहते है कि हिन्दुस्तान जाने वाले रास्ते का पता लगाए और फिर उसे लूटे।

फिर सरदार ने कहा कि जीते-जी तो मैं किसी पुर्तगाली जहाज को हिन्दुस्तान जाने वाले रास्ते का पता लगने न दूंगा।

वालू ने पूछा—"क्यो ?" तो सरदार ने कहा—"तब इस समुद्री रास्ते पर इन्ही लोगो का अधिकार हो जाएगा। ये मनमानी करेंगे। औरो को हिन्दुस्तान जाने से रोकेंगे।"

वालू ने फिर पूछा—"और वह जहाज कहा गया ?" है

"गुलशन उसे ऐसी जगह ले गया है, जहा भयानक समुद्री तूफान आया करते है। वहा से उस जहाज का बचकर आना मुश्किल है।' सरदार ने कहा—"जब गुलशन जा रहा था, तब मैंने उसे बतला दिया था कि अगर वह जहाज हिन्दुस्तान की राह ढूंढने निकला हो तो उसे भटका देना।"

"मगर गुलशन का क्या होगा ?' वालू ने पूछा।

"हो सकता है वह लौट आये, और हो सकता है, न भी लौट पाये। पर जहा बहुत सारे लोगो का फायदा हो, वहा एक

आदमी, दो आदमी, चार आदमी की कुरबानी देने मे कभी भी नही हिचकना चाहिए।" सरदार ने एकाएक गभीर होकर कहा—"और गुलशन तो एक नही, कई देशो के लोगो की भलाई के लिए अपनी कुरबानी देने गया है।"

"सो कैसे ?" बालू ने अचरज से पूछा।

"बालू," सरदार ने उसे समझाते हुए कहा—"हम अरबी लोग है। हमारा देश तीन ओर समुद्र मे घिरा हुआ है। हमारे देश मे जितने आदमी बसते हैं, उतनी उपज नही होती। इसलिए हम सदियो से दूसरे देशो के साथ व्यापार कर काम चलाते है। हम नही चाहते कि कोई और देश हमारे व्यापार मे भागीदार बने।"

बालू की समझ मे सरदार की बात आ गयी थी। वह जान गया था कि डाकू होने के बावजूद सरदार अपने देश के लोगो को बहुत प्यार करता है। उनके लिए कोई भी कुरबानी देने को तैयार है। फिर बालू की नजरो मे अपना गाव, अपना घर और पहाडो भरा वह इलाका घूम गया, जिसे सरदार उसका देश हिन्दुस्तान कहा करता था।

जहाज पर रहते-रहते बालू को जाने कितने बरस बीत गये। अब वह जवान हो गया था। सरदार ने एक तरह मे उसे अपना वारिस बना दिया था। अब सरदार मस्तूल पर बने अपने कमरे मे बैठा रहता और दूरबीन मे दूर-दूर तक फैले समुद्र को देखा करता।

इधर बालू ने सरदार से बहुत-सी बाते, बहुत-सी भाषाए सीख ली थी। उसे तरह-तरह के हथियार चलाना भी आ गया था। कई जहाजो की लूट मे उसने भी हिस्सा लिया था। उसकी

फ़ुरती देखकर सरदार खुशी से फूल उठता था।

बालू की हिम्मत देखकर सरदार गद् गद् हो जाता था। सरदार ने महसूस किया था कि बालू की हिम्मत और सूझ-बूझ के कारण ही कई बार उसके जहाज की रक्षा हुई है। उसे यह भी मालूम हो गया था कि बालू का नाम हिन्दुस्तान के समुद्री किनारे पर ही नही, सरनद्वीप से लेकर कुस्तुनतुनिया तक फैल गया है। उसका नाम सुनते ही व्यापारी जहाज वाले काप उठते हैं।

सरदार बालू से बहुत खुश था। अब वह चाहता था कि बालू को बाकायदा सरदार बना दे और खुद अपने देश जाकर आराम से जिन्दगी बिताये। असल मे वह अपनी समुद्री जिन्दगी से ऊब गया था। वह अपने मन की बात बालू से भी कहने वाला था कि एक घटना घट गयी।

जहाज की बिल्ली

उस दिन सरदार सदा की भाँति दूरबीन के सहारे समुद्र की निगरानी कर रहा था। सहसा उसे दूर एक धब्बा-सा नजर आया। धीरे-धीरे वह धब्बा बड़ा होता गया, और अन्त मे उसने एक बड़े जहाज़ का रूप ले लिया। सरदार ने फौरन बालू को आवाज़ दी। बालू बिल्ली की-सी फ़ुरती से ऊपर चढ आया और सरदार को गम्भीर देखकर चौंक गया। सरदार ने उसे दूरबीन थमा दी। बालू ने उसमे नज़र गडा दी। अब जहाज़ साफ़-साफ़ नज़र आ रहा था।

बालू ने सरदार की ओर प्रश्नभरी नजरों से देखा। सरदार ने गम्भीर स्वर में कहा, "लगता है, यह जहाज पुर्तगालियों का है। तुम फौरन एक नाव में सवार होकर जहाज के पास पहुंचो। यदि कोई खतरा देखो तो 'जंगली' के द्वारा फौरन खबर करो। इस बीच मैं जहाज को संभालता हूं।"

बालू ने फौरन चलने की तैयारी शुरू कर दी। उसने अपने कुछ चुने हुए साथियों को इकट्ठा किया, फिर जहाज पर पाले गये सैकड़ों कबूतरों में से 'जंगली' नामक कबूतर को लिया और एक छोटी सी नाव में बैठकर उस अजनबी जहाज की ओर चल दिया।

चार-पांच घंटे नाव खेने के बाद वह उस जहाज के पास पहुंच गया। उसने देखा कि सरदार का अनुमान सच था। वह जहाज सचमुच पुर्तगालियों का था।

बालू की नाव देखते ही ढेर-सारे पुर्तगाली जहाज की कगार पर आ खड़े हुए थे। अब जहाज का लंगर भी डाल दिया गया। बालू ने धीरे-धीरे नाव उस जहाज से लगायी और लटकती हुई सीढ़ी से चढ़कर जहाज में जा पहुंचा।

जहाज का कप्तान उसकी फुर्ती से बहुत प्रभावित हुआ। वह बालू को अपने कमरे में ले गया। बालू ने उसे अपना परिचय दिया। सरदार ने उसे पुर्तगाली भाषा भी सिखा दी थी। बालू का परिचय पाकर कप्तान के माथे पर चिन्ता की रेखाएं उभर आयीं। बालू तुरन्त यह भांप गया। वह बोला, "आप परेशान क्यों हो रहे हैं? हमारे-आपके सम्बन्ध तो दोस्ताना हैं। अगर हमारे मन में कोई बैर होता तो क्या मैं अकेला आता?"

बालू की बातों से कप्तान की चिन्ता कुछ दूर हुई। वह उस

अपना जहाज दिखाने ले गया। वालू जहाज देखकर आश्चर्य से भर गया। इतना बड़ा जहाज उसने अब तक नहीं देखा था। एक जगह उसने नशे में चूर एक अरबी मल्लाह को देखा। वह झूमता हुआ कोई गीत गुनगुनाता चला जा रहा था।

वालू ने कप्तान की ओर देखा तो वह हँसकर बोला, "इसे आप नहीं जानते? यह है इब्न माजिद मल्लाह, जिसे लोग 'समुद्र का शेर' कहते हैं। यह हमें हिन्दुस्तान की राह बतला रहा है।"

यह सुनते ही वालू चौंक उठा। पर उसने स्वयं पर काबू रखा और हँसते हुए बोला, "समुद्र का शेर! इसे कहाँ से पकड़ लाये?"

कप्तान ने भी हँसकर जवाब दिया, "इसकी भी लम्बी कहानी है। खैर, उसे सुनकर आप क्या करेंगे। बस, यही जान लीजिए कि 'समुद्र का शेर' अब जहाज की बिल्ली बन गया है। हम इसे शराब पिलाते हैं यह हमें हिन्दुस्तान की राह दिखाता है।

वालू ने ठठाकर कहा, "आप तो बहुत फायदे में रहे।"

कप्तान ने हँसकर उत्तर दिया, "व्यापारी जो ठहरे।"

वालू जल्दी से जल्दी इस बात की खबर सरदार को देना चाहता था। उसने जहाज देखने के बहाने कप्तान से छुट्टी ली और मौका पाकर सारी बातें एक कागज पर लिख दीं। फिर उसने वह कागज अपने साथियों को दे दिया। उन्होंने पालतू कबूतरों के पैरों में वह चिट्ठी बांध दी और उसे चुपके से उड़ा दिया।

जहाज पर मल्लाह वालू 'जंगली' का उतना देख [illegible]

था। जंगली को उड़ते हुए देखकर उसे अपने बाज्या की याद हो आयी। फिर तो जैसे सारा बचपन बालू की आँखों के सामने नाचने लगा। उसने सोचा—क्यों न वह भी इसी जहाज के साथ हिन्दुस्तान चला जाए। पर उसी समय उसे सरदार का खयाल आया। सरदार का बूढ़ा चेहरा उसकी आँखों के सामने घूम गया। बालू ने तय किया—इस समय सरदार को अकेले छोड़ना नीचता होगी। उसने जहाज पर ही रुकने का निश्चय किया।

वह कप्तान के कमरे की ओर जा रहा था कि रास्ते में उसे वही शराबी मल्लाह मिल गया। वह झूमता हुआ चला आ रहा था।

बालू ने चारों ओर देखा, कहीं कोई नहीं था। जहाज का ऊपरी हिस्सा सूना था। बालू के मन में एक योजना आयी। वह फौरन आड़ में खड़ा हो गया और ज्योंही शराबी मल्लाह उसके पास से गुजरा, बालू चीते के समान उस पर झपटा। उसने फुर्ती से उसके गले की नस दबा दी। नस के दबते ही मल्लाह का बेजान शरीर बालू के हाथों में झूल गया। बालू ने एक बार फिर चारों ओर देखा, कहीं कोई नहीं था। सुअवसर देख बालू ने मल्लाह का बेजान शरीर नीचे पानी में फेंक दिया।

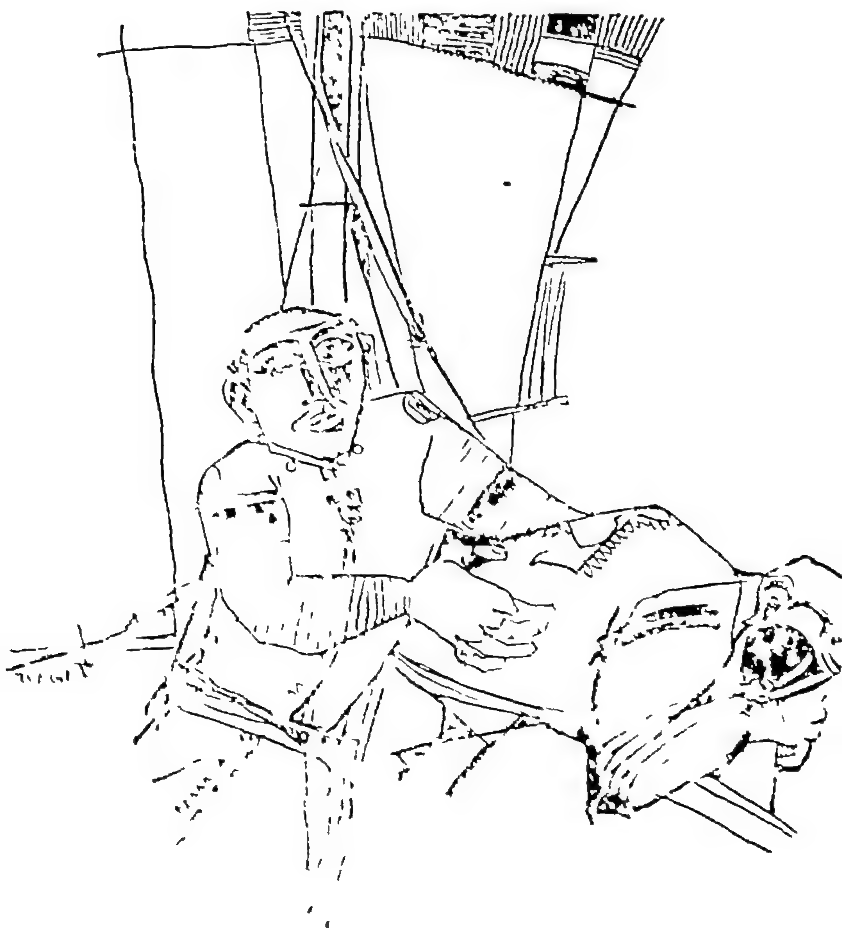
छपाक की आवाज़ के साथ मल्लाह का निर्जीव शरीर पानी में गिरा। बालू भी फौरन समुद्र में कूद पड़ा।

इसी बीच जहाज पर भगदड़-सी मच गयी। लोग बालू को बचाने के लिए रस्सियाँ फेंकने लगे। बालू ने कुछ देर मल्लाह के शरीर को ढूँढ़ने का अभिनय किया, फिर रस्सी पकड़कर जहाज़ पर लौट आया।

कप्तान को उसने दबे दुःखी स्वर में बतलाया कि उनका

अरबी मल्लाह नशे की हालत मे समुद्र मे कूद पडा । उसने उसे बचाने की बहुत कोशिश की, पर उसका कही पता न चला ।

अरबी मल्लाह के पानी मे कूद जाने की खबर सुनते ही कप्तान का चेहरा उतर गया । वह बोला, "अब क्या होगा ?



हम कैसे हिन्दुस्तान जाएँगे ?'

अचानक उसे कुछ याद आया। उसके चेहरे पर फिर से प्रसन्नता छा गयी। बालू इस परिवर्तन का रहस्य नहीं समझ पाया। तभी कप्तान ने कहा, 'पर चिन्ता की बात नहीं। उस मल्लाह ने हमें एक नक्शा बना दिया था। हम उसकी मदद से हिन्दुस्तान पहुँचने की कोशिश करेंगे।"

बालू ने यह सुना तो परेशान हो गया। उसकी सारी मेहनत बेकार हुई जा रही थी। उसने कहा, "आप चिन्ता न करें। मेरे सरदार भी हिन्दुस्तान का रास्ता जानते हैं। हम लोग उधर ले चलेंगे।"

बालू की बातें सुनकर कप्तान खुश हो गया। उसने बालू की पीठ थपथपाकर कहा, "शाबास! अगर हम हिन्दुस्तान पहुँच गये तो देखना तुम्हें एक न एक दिन वहाँ का राजा जरूर बना देंगे।"

कप्तान की शेखी ने बालू का माथा ठनका दिया। हिन्दुस्तान का राजा! उसे लगा, जरूर कप्तान की बात में कोई बड़ा भेद छिपा है। उसने तुरन्त इसकी सूचना अपने सरदार को देने का फैसला किया।

बालू ने कप्तान से कहा, "मैं अभी सरदार के पास जाता हूँ। उनसे सलाह कर आपको खबर करता हूँ।"

कप्तान को तो जैसे घर बैठे कोई अपार धन दिये जा रहा था। उसने सरदार को भेंट देने के लिए अनेक कीमती उपहार दिए और फिर बालू को सादर विदा किया।

बालू बहुत परेशान था। वह कब अपने जहाज पर पहुँचा, इसका भी उसे पता नहीं चला। जहाज पर पहुँचकर उसने

सरदार को सारी बातें बतलायीं। अरबी मल्लाह को मारकर फेंकने की घटना सुनायी। उसके मारे जाने की खबर सुनते ही सरदार उछल पडा। उसने बालू को गले से लगा लिया। बालू कुछ समझ न पाया। सरदार ने उसे बताया कि उस 'समुद्र के शेर' ने ही उसके पिता के जहाज को लूटा था। सरदार ने फिर कहा, "बालू, मेरी जिन्दगी का एक सपना तो पूरा हुआ। अब मैं मर भी गया तो कोई अफसोस नहीं।"

फिर उसने कहा, "मुझे कप्तान की बातों में कोई बहुत बडा भेद नजर आता है। मुझे लगता है कि ये पुर्तगाली व्यापार की आड में हिन्दुस्तान की धरती पर कब्जा जमाने का ख्वाब देख रहे हैं। पर मैं अपने जीते-जी यह नहीं होने दूंगा।"

कुछ पल रुककर उसने फिर कहा, 'बालू, मैं उसे चकमा देने की कोशिश करता हूँ। तुम यह जहाज लेकर फौरन हिन्दुस्तान चले जाओ और वहां के राजा को खबर करो कि समुद्र पार के कुछ फिरंगी उन्हें गुलाम बनाने आ रहे हैं।"

बालू कुछ कह न सका। उसी समय सरदार एक बडी-सी नाव में अपने कुछ साथियों के साथ सवार हो गया। उसने बालू को भी अपने जहाज का लंगर उठाने का संकेत किया।

सरदार को विदा करते हुए बालू का गला भर आया। उसे लगा, जैसे आज दूसरी बार समुद्र उसकी मां को उससे छीन रहा है। वह भरे हृदय से जहाज के मस्तूल पर चढने लगा।

मस्तूल पर बने कमरे में पहुँचकर बालू ने दूरबीन उठा ली। वह उसे आंखों के सामने लगाकर सरदार को देखने लगा।

धीरे-धीरे बालू की आंखों के सामने अपनी पिछली जिन्दगी के दिन रंगीन गुब्बारों की तरह तैरने लगे। उसे वह दिन याद

आ गया, जब वह पहली बार सरदार से मिला था। उसे सरदार का प्यार, पिता का-सा उसका व्यवहार रह-रहकर याद आने लगा। बालू का मन हुआ कि वह सरदार को रोक ले, पर वह जानता था कि इससे सरदार प्रसन्न नहीं होगा बल्कि उसे रंज होगा। कर्तव्य के लिए बड़ी से बड़ी कुरबानी देने को सरदार सदा तैयार रहता था और उसने यही सीख बालू को भी दी थी।

बालू ने मन ही मन सरदार को प्रणाम किया और ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उसके धर्मपिता को सदा सुरक्षित रखे।

जब सरदार की नाव काफी दूर निकल गयी तो बालू ने अपने जहाज का लंगर उठाने का आदेश दिया। उसका आदेश पाते ही मल्लाहों ने लंगर उठा दिया और जहाज समुद्र की लहरों पर मस्त हाथी की चाल से हिलता-डोलता चल पड़ा।

स्वदेश की ओर

बालू अपने कमरे में बैठा-बैठा समुद्र के पानी की ओर देख रहा था। जब जहाज पानी काटता तो लगता जैसे कोई जलपरी टोकरियाँ भर-भरकर मोती उड़ेल रही है। बालू का मन हुआ, वह समुद्र में कूद जाए और जी भरकर नहाये। पर अब उसे अपने पद और जिम्मेदारियों का ध्यान था। अब वह एक बहुत बड़े जहाज का मालिक और एक बहुत नामी समुद्री लुटेरे दल का सरदार था। अब वह बालक बालू नहीं रहा था।

समुद्र में यात्रा करते-करते बालू को जाने कितने दिन बीत गये, पर किनारे का कहीं पता नहीं था।

किसी अरबी सौदागर का था। उसने समुद्री व्यापारियों में पहले से तय नियमों के अनुसार अपने जहाज पर एक झंडा फहरा दिया। उसका अर्थ यह था कि वह मित्र है, शत्रु नहीं। यह देखकर दूसरे जहाज पर भी उसी रंग का झंडा लहराने लगा। अब बालू ने संकेतों द्वारा उस जहाज के कप्तान को अपने जहाज पर आने का निमंत्रण दिया। उसका निमंत्रण स्वीकार कर लिया गया और थोड़ी देर में उस जहाज का कप्तान एक नाव में बैठकर बालू के जहाज की ओर आने लगा।

कुछ ही देर में वह बालू के सामने था। बालू ने उसका खूब स्वागत किया। कप्तान भी बालू के व्यवहार से खुश हुआ। उसने उसे बताया कि वह हिन्दुस्तान से आ रहा है।

"हिन्दुस्तान!" बालू उछल पड़ा। उसने उत्सुकता से पूछा, "कितने दिनों का सफर है यहाँ से?"

"लगभग दस-पन्द्रह दिनों का।" कप्तान ने उसे बतलाया।

बालू ने उससे हिन्दुस्तान के बारे में अनेक प्रश्न किये। हिन्दुस्तान के बारे में बालू की उत्सुकता देखकर कप्तान को बहुत अचरज हुआ। उसने पूछा, "क्या आप पहले वहाँ कभी नहीं गये?"

बालू के मुँह से निकल पड़ा, "जनाब, मैं तो पैदा ही वहाँ हुआ हूँ।"

"कहाँ?"

"कोंकणपट्टी में।" बालू ने खुशी से उछलते हुए कहा और आतुरता से पूछा, "कोंकणपट्टी का क्या हाल है?"

"कोंकणपट्टी का बहुत बुरा हाल है। सुनकर आपको रंज ही होगा।"

कप्तान की बात सुनकर बालू गम्भीर हो गया। उसने कहा, "तब तो आप मुझे एक-एक बात विस्तार से बतलाइए। आप नहीं जानते कि मैंने पिछले कई वर्षों से अपने देश की धरती नहीं देखी है।"

कप्तान बालू की आतुरता समझता था। उसने बताया, 'कोकणपट्टी मे पिछले तीस वर्षों मे जब-तब खून की नदियाँ ही बहती रही हैं। पहले तो दिल्ली सल्तनत ने अपने एक सिपहसालार को एक बडी फौज के साथ कोकणपट्टी भेजा। वह फौज तहलका मचाती चादोर तक पहुँच गयी।

चादोर मे तब राजा कामदेव के लडके का राज्य था। वह बहुत वीरतापूर्वक लडा, पर दिल्ली सल्तनत की फौज के आगे उसकी चल न पायी। अन्त मे वह अपनी राजधानी की रक्षा करते-करते मारा गया। दिल्ली की फौज ने खूब लूटपाट की। घर उजाडे। लोगो को सताया। फिर लूट का सारा धन लादकर अपने वतन की ओर रवाना हो गयी।

राजा कामदेव का पोता बहुत वीर था। इसलिए जैसे ही दिल्ली की फौज मुडी, उसने स्वयं को चादोर का शासक घोषित कर दिया। उसने बडी हिम्मत के साथ चादोर को अपने पैरो पर खडा करने की कोशिश की, पर होनी तो कुछ और ही लेख लिख रही थी। राजा का लडका कुछ लोगो के भटकावे मे आ गया और उसने स्वयं राजा बनने के लिए अपने पिता को ही धोखा देने की ठानी।

उस बेईमान ने होनावर के नवाब जमालुद्दीन को सदेश भिजवाया कि वह चादोर पर हमला कर दे। अपने पिता के खिलाफ वह उसकी पूरी सहायता करेगा।

जब यह संदेशा नवाब को मिला तो वह खुशी से उछल पड़ा। उसने फौरन अपने वजीर को कूच का हुक्म दिया।

और, जैसे पलक झपकते बावन जहाजों का फौजी बेड़ा मारमगाँव के बन्दरगाह पर आ लगा। राजा को उसके आने की खबर देर से मिली थी, फिर भी वह उसके मुकाबले की तैयारी करने में जुट गया, पर उसकी सारी तैयारियाँ बेकार गयीं। उसके अपने सगे बेटे ने उसे ऐन वक्त पर धोखा दे दिया। राजा को हार का मुँह देखना पड़ा, किन्तु उसने हिम्मत नहीं छोड़ी और ज्योंही नवाब की फौज लूटपाट कर रवाना हुई, वह अपने महल में लौट आया और उसने स्वयं को फिर से राजा घोषित कर दिया। उसकी वापसी से लोगों में खुशी की लहर दौड़ गयी, पर यह खुशी अधिक देर तक न ठहर पायी।

नवाब की सेना को ज्योंही इसकी खबर मिली, वह फिर से लौट आयी। इस बार भयंकर लड़ाई हुई। राजा के साथ उसके चन्द भरोसे के ईमानदार साथी ही थे। वे सब जवांमर्दी के साथ लड़े और अन्त तक नवाब की फौज का सामना करते रहे। पर आखिर तूफान के सामने दीए की क्या बिसात! राजा अपने साथियों के साथ लड़ते-लड़ते मारा गया।

रानी उस समय राजधानी में नहीं थी। राजमहल में सिर्फ राजकुमारी अपनी दासियों के साथ थी। जब उसे अपने पिता की शहादत की खबर मिली तो उसने अपने सारे जेवर नष्ट कर दिये। फिर अपनी दासियों के साथ वह महल की दीवार के पार बहनेवाली नदी में कूद पड़ी। इस घटना के साथ ही चादोर पर से कदम्बों का राज खत्म हो गया।"

कप्तान से यह सारी कहानी सुनकर बाप का मन भर

आया। उसकी आँखो के सामने नदी मे कूदती राजकुमारी, लूट-पाट करती नवाब की सेना का दृश्य घूम गया।

बालू ने कप्तान से पूछा "क्या कामदेव के कुल की रक्षा के लिए आसपास के राजा नही आए ?"

कप्तान व्यंग्य की हँसी हँसा। "जब अपने सगे ही दगा दे जाएँ तब औरो से क्या उम्मीद रखी जाए ?"

उनका कहना सच था। बालू कप्तान की बात सुनकर सोच मे डूब गया।

तभी कप्तान ने कहा, "ये तो बीती बाते हैं। पर आज की स्थिति तो इससे भी खराब है।"

बालू चौंक पड़ा। उसने चिन्तित स्वर मे पूछा, "क्या मतलब ?"

'मतलब यह कि हिन्दुस्तान के सारे पश्चिमी समुद्री किनारे पर इस समय खतरो के बादल मँडरा रहे हैं, पर किसी को इस बात की फिक्र नही है। लोग अपनी-अपनी डफली बजाने मे लगे हुए हैं।" कप्तान ने कुछ व्यंग्य और कुछ चिन्ता भरे स्वर मे कहा।

बालू ने कहा, "आप पहेलियाँ न बुझाएँ, साफ-साफ बतलाएँ।'

कप्तान ने गंभीर स्वर मे कहा, "जनाब, आपको इस ओर आते हुए क्या कोई फिरंगी जहाज नही मिला ?"

बालू को पिछले दिनो मिले दोनो जहाजो की याद आ गयी। वह बोला, 'हाँ, मिले तो थे, पर हमने उन्हे धोखा देकर भटका दिया। अब वे कभी हिन्दुस्तान नही पहुँच पाएँगे। उन्हे तो यहाँ की राह ही नही मालूम।

कप्तान ने कहा, "आज नहीं तो कल मालूम पड़ ही जाएगी। क्योंकि जब से कोविला ने हिन्दुस्तान के बारे में खबर भेजी है, तब से पुर्तगालियों का दिन का चैन और रात की नींद हराम हो गयी है।"

"कोविला ! यह कौन है ?" बालू ने कुछ अचरज से पूछा।

"कोविला हिन्दुस्तान पहुंचने वाला पहला पुर्तगाली है। वह पुर्तगाल के राजा जॉन दूसरे का खास आदमी है। वह एक अरबी व्यापारी का वेश धरकर, एक अरबी जहाज में कन्नूर पहुंचा था। सुनते हैं, हिन्दुस्तान की धन-दौलत देखकर उसकी आँखें फट गयीं। उसने अरबी सौदागर का वेश धरे-धरे हिन्दुस्तान के पश्चिमी किनारे के चप्पे-चप्पे को छान डाला। कोई कहता है, वह कालीकट गया था। कोई बतलाता है, वह चादोर तक भी पहुंचा था। कहते हैं, इसके बाद उसने अपने सफर का पूरा हाल लिखा और उसे एक अरबी सौदागर के हाथों मिस्र भेज दिया। वहाँ कैरो में राजा जॉन का एक खुफिया पहले से मौजूद था। उसने कोविला की लिखी सारी खबरें अपने राजा तक पहुँचा दीं। कोविला ने एक बड़ा काम और किया था—वह यह कि समुद्री रास्ते की जानकारी और मौसम का हाल भी उसने खुलासे के साथ लिख भेजा था। उसी कोविला की खबरों के सहारे अब पुर्तगाली हिन्दुस्तान पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं।'

कप्तान कहता गया, 'मुझे तो उनके इरादे बहुत खतरनाक मालूम पड़ते हैं। कुछ अरबी सौदागरों का कहना है कि पुर्तगाली हिन्दुस्तान पहुंचने के लिए बड़ी से-बड़ी कुर्बानी देने के लिए

तैयार हैं। उनकी आंखों के सामने हिन्दुस्तान की बेशुमार दौलत के सुनहरे तारे जगमगा रहे हैं। मैं नहीं जानता सचाई क्या है। पर सुना है कि वे वहां ईसाइयत का झंडा भी गाड़ना चाहते हैं ताकि हिन्दुस्तान की धरती पर वे हमेशा के लिए पैर जमा सकें।'

कप्तान की बातें सुनकर बालू सिहर उठा। उसने कप्तान से कहा 'मैं जीते-जी ऐसा कभी नहीं होने दूंगा।"

बालू का स्वर सुनकर कप्तान की आंखें चमक उठीं। उसने कहा 'जनाब, अब देर करने का वक्त नहीं है। आप फौरन कालीकट के जामोरिन के पास पहुंचें। इस समय वही हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी समुद्री ताकत है। वह वीर भी है और दयालु भी। आप उसे जाकर सारी बातें बतलाइए। शायद वह कुछ कर सके।

कप्तान की बातों ने बालू में एक ओर तो गहरी चिन्ता भर दी थी तो दूसरी ओर वह अपूर्व उत्साह से भी भर उठा था। उसे लग रहा था कि जैसे वह किसी बहुत बड़े काम में भागीदार होने जा रहा है। उसने कप्तान से विदा ली और अपने जहाज का लंगर उठा दिया।

कालीकट के तट पर

बालू का जहाज बहुत तेजी से चला जा रहा था, पर बालू को लग रहा था कि जैसे वह काफी धीमी रफ्तार से चल रहा है। वह दिन-दिनभर दूरबीन को अपनी आंखों के आगे लगाये

दूर-दूर तक ताका करता। एक दिन सवेरे ही उसे एक काली लकीर-सी दिखायी पडी। उसे देखते ही बालू के शरीर मे एक सिहरन दौड गई। उसकी मजिल अब बिलकुल पास थी।

दोपहर तक बालू को किनारा साफ-साफ नजर आने लगा। उसे ऊँचे-ऊँचे पहाड और उनके नीचे सिर उठाए खडे नारियल के वृक्ष भी दिखायी देने लगे थे। बालू का मन हो रहा था कि उसके पख उग आएँ और वह पलभर मे अपने देश पहुँच जाए। शाम होते-होते बालू को छोटे-छोटे कई जहाज दिखायी देने लगे। वह समझ गया कि अब वे बन्दरगाह के बिलकुल नजदीक पहुँच गए है।

सचमुच बालू कालीकट के पास पहुँच गया था। कालीकट का बन्दरगाह उन दिनो समुद्री व्यापार का एक बहुत बडा केन्द्र था। वहाँ बहुत चहल-पहल थी। छोटे-छोटे पालवाली अनेक नावे समुद्र की छाती पर बत्तखो जैसे सिर उठाये घूम रही थी। बालू का जहाज उन सबके बीच मे किसी राजहस की तरह गुजरता हुआ चला जा रहा था।

बालू का जहाज जब बन्दरगाह पर लगा, रात काफी उतर आयी थी। चारो ओर अन्धकार छा गया था। एक ओर समुद्री लहरो का गर्जन था तो दूसरी ओर बन्दरगाह के मल्लाहो के गीतो के स्वर वातावरण के सीने को किसी तीर की भाँति बेध रहे थे। बालू के साथियो ने उसे सुबह ही तट पर उतरने की सलाह दी, पर बालू न माना। वह लगभग तीस बरस बाद अपने घर लौटा था। जहाज पर एक क्षण अब उसे एक वर्ष से ज्यादा मालूम पड रहा था।

तरुणी कान्हा के साथ बालू जहाज से उतर पडा। उस समय

वह सरदार की वहुमूल्य पोशाक मे था। उसकी कमर के दोनो ओर दो चाकू लटक रहे थे। अगुलियो मे हीरे-मोती, मूँगा जडी अगुठियाँ थी। वालू का ठाठ-वाट देखकर मल्लाह आश्चर्य-चकित रह गये। वे उसे झुक झुककर सलाम करने लगे। अव तक वन्दरगाह के अधिकारियो को वालू के आने की खवर मिल चुकी थी। वे उसकी आवभगत करने पहुँच गये थे। उन्होने उसे कोई वहुत वडा सौदागर समझ लिया था।

वालू ने उन अधिकारियो को तरह-तरह की सौगाते दी और कहा कि मै सुवह ही महाराजा से भेट करना चाहता हूँ।

अधिकारी वालू से वहुत प्रभावित हुए थे। उन्होने कहा, "हमने आपके आने की खवर दरवार मे पहुँचा दी है। आप कल सवेरे ही महाराजा से मिल सकते है।"

दूसरे दिन विलकुल सुवह ही वालू कालीकट के राजा से मिलने चला। राजा की पदवी जामोरिन थी, और सव उसे इसी नाम से वुलाते थे।

जव वालू जामोरिन के महल मे पहुँचा तो वह उस समय अपने मन्त्रियो के साथ सलाह-मशवरा कर रहा था। वालू ने झुक-कर जामोरिन का अभिवादन किया और फिर एक थाल मे हीरे-मोती भरकर उसकी नजर किये। उन हीरो पर नजर पडते ही जामोरिन और उसके मन्त्रियो की आंखे अचरज से फट गयी। आज तक किसी सौदागर ने उन्हे इतनी कीमती भेट नही दी थी।

जामोरिन ने वालू को अपने निकट ही आसन दिया और पूछा, "आप किस देश के रहने वाले है ?"

"हिन्दुस्तान के।"

"हिन्दुस्तान के!" जामोरिन और उसके मंत्री आश्चर्य से बोल उठे।

उन्हें हैरत में पड़ा देखकर बालू मुसकरा उठा। फिर उसने अपनी सारी कहानी विस्तार के साथ जामोरिन को सुनाई। उसने उसे पुर्तगालियों के खतरे से भी सावधान किया। बालू ने कहा, "मैं इसीलिए इतना लम्बा सफर कर आपकी सेवा में आया हूं।"

बालू की बातें सुनकर जामोरिन चिन्तित हो उठा। उसने मंत्रियों की ओर देखा। बालू की बातों से वे भी परेशान नजर आते थे।

काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। फिर जामोरिन ने ही मौन तोड़ा, "आपकी बातों ने हमें चिन्ता में डाल दिया है। हम इस बात की पूरी सावधानी रखेंगे।"

बालू ने झुककर फिर जामोरिन का अभिवादन किया और धीरे-धीरे महल से बाहर आ गया। अब वह अपने मन को काफी हल्का-हल्का-सा अनुभव कर रहा था।

इधर जामोरिन बालू की बातों से चिन्ता में डूब गया। उसके सामने पहली बात तो विदेशियों के षड्यन्त्र की थी। दूसरी बात बालू के लुटेरे होने की थी। नियम के अनुसार तो उसे बालू को गिरफ्तार करवा लेना था, पर उसकी आपबीती सुनकर वह पसीज उठा था। उसके कुछ मन्त्रियों की सलाह थी कि बालू को कैद कर लेना चाहिए, पर जामोरिन का कहना था कि बालू के साथ यह अन्याय होगा। एक तो वह तीन बरस बाद अपने देश लौटा है और वह भी उसकी भलाई के विचार से। ऐसी स्थिति में उसे बन्दी बनाना ठीक नहीं होगा। ऐसा

करने से वह बागी हो जाएगा और आज जो हमारा मित्र है, वह कल घोर शत्रु बन जाएगा।

जामोरिन की बातो मे वजन था। मन्त्रियो को भी उसकी बाते जंच गयी। फिर भी उन्होंने जामोरिन को सलाह दी कि बालू पर नजर रखी जाए।

पर बालू तो किसी तरह अपने गांव पहुंचना चाहता था। वह अपने साथियो के साथ फिर से सफर की योजना बना रहा था। उनके साथियो की राय थी कि अभी सफर न किया जाए। मल्लाहो ने जाने कितने बरसो बाद धरती पर पैर रखा है। अभी एक-दो बरस यही रहा जाए, उसके बाद किसी सफर की योजना बनायी जाए।

यह बात बालू के बेचैन मन को नही जंच रही थी, पर उसके साथियो का कहना भी ठीक था। उसने सोचा, इन सबके सुख और खुशी के लिए अपने जरा से हित का बलिदान करने मे मुझे नही हिचकना चाहिए। उसने कालीकट मे ही कुछ समय रहने का निश्चय किया। उसके इस निर्णय से उसके साथियो मे हर्ष की लहर दौड गयी।

कालीकट मे रहते-रहते बालू को बहुत-सी नयी बातो का पता चला। यहां पहली बार उसे हिन्दुस्तान की विशाल सीमाओ का पता चला। उसने सोचा क्यो न जमीन के रास्ते ही अपने गांव की खोज की जाए।

धीरे-धीरे उसका यह विचार दृढ होता गया और एक दिन उसने जामोरिन से विदा लेने का निश्चय कर लिया।

दूसरे दिन बालू दरबार मे पहुंचा तो वहां भारी चहल-पहल देखकर अचरज से भर गया। उसने एक दरबारी से इस चहल-

पहल का कारण पूछा तो उसने उसी से उलटा सवाल किया—"क्या आप नहीं जानते कि कालीकट से कोई सात-आठ मील दूर कुछ नये सौदागर उतरे हैं। महाराजा को जब यह पता चला तो उन्होंने एक अनुभवी मल्लाह को उन्हें यहाँ लिवा लाने के लिए भेजा है। वे नये सौदागर अब यहाँ आने वाले ही होंगे।"

नये सौदागर! वालू चौंक पड़ा। कहीं पुर्तगीज तो नहीं आ पहुँचे। उसने उसी समय जामोरिन से मिलने का निश्चय किया, पर वह बहुत व्यस्त था। उसे खबर मिल गयी थी कि नये सौदागरों का दल कालीकट पहुँच गया है, और अब वह कुछ ही क्षणों में दरबार में पहुँचने वाला है। इसलिए इस समय और किसी से मिलना उसके लिए सम्भव न था।

कुछ समय बाद विचित्र वेशभूषा में पन्द्रह व्यक्तियों का एक दल उसे दरबार की ओर आता दिखायी दिया। उनके पीछे काफी



भीड थी। लोग अचरज कर रहे थे कि ये किस देश के लोग हैं।

वालू ने उन लोगो के मुखिया को देखा तो उसके शरीर मे विजली की लहर-सी दौड गई। उसके लम्वी दाढी थी और उसकी आँखो से मक्कारी टपक रही थी। वालू ने उसी समय तय कर लिया कि वह कालीकट छोडकर अभी कही नही जाएगा। यही रहकर वह इन नये सौदागरो पर नजर रखेगा।

इसी समय पहरेदार ने जामोरिन के दरवार मे आने की घोषणा की। सभी दरवारी उठ खडे हुए। कुछ क्षणो वाद जामोरिन ने दरवार मे प्रवेश किया। सौदागरो के मुखिया ने जामोरिन का अभिवादन किया और उपहार भेंट किए।

जामोरिन ने उन सवका उचित सत्कार किया और सौदागरो के मुखिया को अपनी कहानी कहने का सकेत किया।

मुखिया ने एक दुभाषिये की सहायता से अपना पूरा परिचय दिया। उसने अपने देश की वहुत तारीफ की और वतलाया कि वह समुद्र पार वसे देशो मे सवसे अधिक समुद्री शक्ति वाला देश है। उनके समुद्री वेडे के आगे सभी देश थर-थर काँपते हैं। अन्त मे उसने अपना नाम वतलाया, "खाकसार को वास्को कहते है।'

वालू उनकी वाते वहुत ध्यान से सुन रहा था। उसने सोचा 'इस व्यक्ति पर कडी नजर रखनी होगी।' वह अपने साथियो से सलाह लेने दरवार से वाहर आ गया। जव उसने उन्हे वास्को के वारे मे वतलाया तो वे भी चिन्तित हो उठे। उन सवने कहा 'यह आदमी आने वाले खतरो का हरकारा ही मालूम पडता है।'

अव वालू के साथी वास्को के पूरे गिरोह पर नजर रखने

लगे। जल्दी ही उन्हे बहुत-सी बाते पता लगी। बालू ने सामो-रिन के मन्त्रियो का भी विश्वास प्राप्त कर लिया था। उनसे उसे पता चला कि नये सौदागर साठ से एक सौ पचास टन के तीन जहाज लेकर आये है। वे चाहते है कि कालीकट मे कोई कारखाना खोले पर शायद सामोरिन इसके लिए राजी नही हो रहा है।

कुछ दिनो बाद बालू को खबर मिली कि वास्को ने काली-कट के अरबी और फारसी सौदागरो के खिलाफ सामोरिन को भड़काने का प्रयत्न किया है। वह चाहता है कि कालीकट मे केवल पुर्तगीजो को ही व्यापार करने की इजाजत दी जाए, पर सामोरिन इस बात के लिए जरा भी तैयार नही है।

उधर बन्दरगाह से मिली खबरो से भी बालू को बहुत राहत मिली थी। उसे पता चला था कि नये सौदागरो के माल मे किसी ने कोई रुचि नही दिखाई है। उसे कोई मिट्टी के मोल भी नही पूछ रहा है। इससे सौदागरो मे बहुत निराशा फैल रही है और वे कूच की तैयारी कर रहे है। एक दिन बालू दरबार से लौट रहा था तो उसे पता चला कि बन्दरगाह पर बहुत तना-तनी का वातावरण है। सामोरिन ने सौदागरो का कुछ माल रोक लिया है जिस कारण वास्को ने पाच लोगो को कैद कर लिया है और वह उन्हे अपने साथ लेकर जा रहा है।

बालू फौरन बन्दरगाह पर पहुचा। उसने देखा कि सचमुच बन्दरगाह पर गरमागरम वातावरण है। वास्को के जहाज रवाना होने की तैयारी मे है, पर छोटी-बड़ी अनेक नावो ने उन्हे घेर रखा है। बालू को लगा कि किसी भी क्षण संघर्ष छिड़ सकता है। वह भी तुरन्त अपने जहाज पर जा पहुचा।

वर्षों बाद आज फिर उसे समुद्री लडाई मे अपने जौहर दिखलाने का अवसर मिल रहा था।

उधर जामोरिन को खबर मिल गयी थी कि बन्दरगाह पर लडाई के बादल मँडरा रहे हैं। वह दूरदर्शी था। उसने तुरन्त वास्को का माल लौटाने का आदेश दे दिया। जामोरिन की दूरदर्शिता से उस समय तो खतरा टल गया, पर बालू जानता था कि पुर्तगाली फिर लौटेंगे और इस बार वे अपनी पूरी ताकत के साथ आएँगे। उसने जामोरिन को अपनी आशंका बतलायी और लडाई के लिए हर क्षण तैयार रहने को कहा।

धीरे-धीरे समय बीतने लगा। दिन, फिर सप्ताह, फिर माह गुजरने लगे। वास्को को गये अभी दो बरस भी न बीत पाये थे कि कालीकट के बन्दरगाह पर तेरह जहाज़ो का एक पुर्तगाली बेडा आ लगा।

बालू को इसकी खबर लगी तो वह फौरन जामोरिन के पास पहुँचा। उस समय जामोरिन बहुत चिंतित था। उसने बालू को बतलाया कि नये जहाजी बेडे के नेता का नाम कावराल है। उसने भी कालीकट मे एक कारखाना खोलने की प्रार्थना की है। इसके लिए वह बहुत-सा धन भी देने को तैयार है। इनकार करने पर लडाई का खतरा है।

बालू कुछ देर सोचता रहा। फिर उसने जामोरिन से कहा, "महाराज आप इसकी चिन्ता न करे। कावराल को यहाँ से भगाने का जिम्मा मेरा।"

जामोरिन ने उसकी ओर प्रश्न-भरी नजरो से देखा।

बालू ने कहा, 'महाराज, आप तो नीतिवान है। राज्य की भलाई के लिए यदि कुछ गलत काम भी करने पडे तो हिचकना

नहीं चाहिए। आपसे मैं बस इतना चाहता हूँ कि हमारे और काबराल के बीच झगड़ा होने पर आप चुप रहें। किसी को दखलदाजी न करने का हुक्म दे दें।"

जामोरिन ने उसकी हामी भर दी तो वालू निश्चिन्त होकर अपने डेरे पर लौट आया।

उधर जामोरिन ने काबराल को कालीकट में कारखाना खोलने की आज्ञा दे दी, इधर वालू भी चुपचाप साथियों को इकट्ठा करने में लग गया। उधर काबरात का कारखाना तैयार हुआ और इधर वालू के जाँबाज साथियों की एक छोटी-मोटी फौज।

काबराल को इन सब बातों की कोई खबर थी ही नहीं। उसे अपने लड़ाकू साथियों पर पूरा भरोसा था। उसने उन्हें कालीकट में रहने वाले अरबी और फारसी सौदागरों का अपमान करने और किसी बहाने भी उनसे उलझकर लड़ने का हुक्म दे रखा था। काबराल की इस नीति ने वालू का काम और भी आसान कर दिया।

और एक दिन ज्वालामुखी फट पड़ा। काबराल के कुछ लोगों ने वालू को अरबी सौदागर समझकर उस पर हमला कर दिया। अब क्या था! वालू के साथियों ने उन पुर्तगीजों पर हमला कर दिया और बात की बात में उन्हें मौत के घाट उतार दिया। फिर वे काबराल के कारखाने की ओर बढ़े। वालू और उसके साथियों ने कारखाने की ईंट-ईंट उखाड़ फेंकी।

काबराल को जब इसकी खबर मिली तो गुस्से से वह अपना-आपा भूल गया। उसने फौरन कालीकट पर गोलाबारी की आज्ञा दे दी। उस समय उसके जहाजों पर लगभग छ सौ हिन्दुस्तानी

मल्लाह माल चढा-उतार रहे थे। गुस्से मे पागल काब्राल ने उन मल्लाहो को भी कत्ल करने का आदेश दे दिया। पुर्तगीज अपने अपमान और नुकसान से क्षुब्ध तो थे ही, काबराल का हुक्म पाते ही उन्होने उन छ सौ बेगुनाह मल्लाहो को कत्ल कर दिया और उनकी लाशे समुद्र मे बहा दी।

काब्राल जानता था कि उसकी इस कूर कार्रवाई से सारे मालाबार मे तहलका मच जाएगा। उसने उसी समय कालीकट छोड देने का फैसला किया।

तब तक रात घिर आयी थी। काबराल को जान बचाने के लिए इससे अच्छा कौन-सा मौका मिल सकता था। उसने लगर उठा दिया और गहरे समुद्र की ओर बढने लगा।

इधर काबराल की गोलाबारी से तट पर अनेक लोग घायल हो गये थे। बाल अपने साथियो के साथ उनकी सेवा मे लगा था। रातभर वह उनकी सेवा करता रहा। सवेरे उसे काबराल की याद आयी। उसने काब्राल को मजा चखाने का निश्चय किया और कुछ लोगो के साथ बन्दरगाह की ओर चल पडा। पर वहाँ पहुँचने पर उसे पता चला कि काबराल तो रातो-रात भाग निकला है। बालू ने कई कारणो से उनका पीछा करना व्यर्थ समझा। एक तो काब्राल गोला-बारूद से लैस था। दूसरे, बालू के लिए उसके तेज जहाजो का पीछा करना भी अब कठिन था। बालू मन मारकर रह गया, पर जाने क्यो उसे लग रहा था कि आज नहीं तो कल पुर्तगीजो से उसकी मुठभेड होकर रहेगी।

बालू की यह आशका कुछ ही दिनो मे सच उतरी। उसे जामोरिन के दरबार से खबर मिली कि काब्राल पुर्तगाल जाने की बजाए कोचीन की ओर मुड गया है और कोचीन के राजा

ने उसे आश्रय दिया है। बालू को यह भी पता लगा कि कोचीन का राजा जामोरिन की समुद्री शक्ति से जलता है इसीलिए उसने कावराल को आश्रय देकर उसकी समुद्री शक्ति को नष्ट करने का षड्यन्त्र रचा है।

यह खबर पाते ही बालू जामोरिन से मिला और उसने उसी समय कोचीन के राजा पर हमला कर देने की उसे सलाह दी। बालू ने कहा, "महाराज, इस समय कावराल की हिम्मत टूटी हुई है। अगर हम उस पर इस समय हमला कर दें तो हम कोचीन-नरेश भी उसे भागने से नहीं रोक सकेंगे। मैं अपने साथियों के साथ आपका अन्त तक साथ दूँगा।"

बालू की बातों में जैसे जादू था। जामोरिन ने उसी समय अपने समुद्री बेड़े के सेनापति को बुलाकर कोचीन पर हमला करने का आदेश दिया।

कालीकट की समुद्री सेना अपनी शक्ति के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध थी। पर उसकी एक कमजोरी थी जिसे बालू भाँप गया था। वह जान गया था कि जामोरिन की समुद्री सेना तट के आस-पास ही अच्छी लड़ाई लड़ सकती है। गहरे समुद्र में जाकर लड़ने का उसे अभ्यास नहीं है। इसलिए उसने समुद्री सेनापति को कावराल को तट पर ही पकड़ने की सलाह दी।

सेनापति को बालू की बात जँच गयी।

अगली सुबह जामोरिन की समुद्री सेना बड़े-बड़े जहाजी बेड़ों पर कोचीन की ओर रवाना हो गयी। सबसे आगे बालू का जहाज था। उसका काम कावराल को भागने से रोकना था। बालू ने ही खुशी-खुशी यह जिम्मेदारी उठायी थी। वह कावराल से बेगुनाह मल्लाहों की मौत का बदला लेने के लिए बेचैन था।

पर उसकी यह इच्छा पूरी नही हो पायी। कालीकट से निकलने के कुछ दिनो वाद उसे सूचना मिली कि कावराल कोचीन से भी भाग निकला है।

अव कोचीन जाना व्यर्थ था। पर वालू की इच्छा थी कि वह अकेले जाकर कोचीन के राजा को समझाये, पर जामोरिन के सेनापति ने उसे ऐसा करने से रोका। उसने कहा, "आप कोचीन न जाएँ। आप तो कोचीन की भलाई के लिए जाएँगे, पर वहा का राजा आपको जामोरिन का गुप्तचर समझकर कैद कर लेगा। मै आपको कभी कोचीन न जाने दूँगा।"

वालू के साथियो ने भी उसे समझाया। अव तो वालू विवश हो गया और जामोरिन का समुद्री वेडा फिर से कालीकट वापस लौट चला।

कालीकट मे जव कावराल के इस तरह रातोरात भागने की खबर पहुँची तो सभी खुशी से झूम उठे। सभी की जवान पर वालू का नाम था। जामोरिन की नजरो मे भी वालू की इज्जत वढ गयी थी।

जामोरिन ने एक दिन अपने दरवार मे एक वहुत वडे समारोह का आयोजन किया। इसने कालीकट ही नही आसपास के सभी जमीदारो और सरदारो-सामन्तो को भी निमन्त्रित किया गया।

जामोरिन ने अपने हाथो से वालू को हीरो की मूठवाली एक तलवार भेंट की। उसने उसे 'समुद्र का शेर' उपाधि से भी विभूषित किया और अपनी समुद्री सेना मे एक वहुत ऊँचे पद पर उसे नियुक्त किया। वालू के साथियो को भी उन्होने पुरस्कृत किया। अव वे सव जामोरिन की समुद्री सेना मे शामिल हो गये।

वालू इतना सम्मान पाकर गद्गद् हो उठा। उसका गला भर

आया। जब वह जामोरिन के प्रति धन्यवाद देने खड़ा हुआ तो भावावेश के कारण कुछ क्षण वह बोल ही नहीं पाया। फिर उसने गम्भीर स्वर में इतना ही कहा, "महाराज, आपने एक छोटे-से आदमी पर बहुत बड़ी जिम्मेदारियाँ डाल दी है। आप आशीर्वाद दें कि वह उसे पूरा कर सके।"

बालू की इस विनम्रता ने सबका हृदय जीत लिया। सभी उसकी सराहना करने लगे।

एक नई जिन्दगी

अब बालू की एक नई जिन्दगी शुरू हुई। उसने जामोरिन की समुद्री सेना को गहरे समुद्र में भी लड़ाई लड़ने का प्रशिक्षण देने का फैसला किया। उसने काफी सोचने-विचारने के बाद जामोरिन के सामने एक योजना रखी।

जामोरिन ने उस योजना का बड़ा बारीकी से अध्ययन किया। उसकी योजना के अनुसार जामोरिन को काफी धन खर्च करना पड़ता पर उसका फल उसे ही नहीं, सारे पश्चिमी तट को मिलता। जामोरिन ने बालू को बुलवाकर विस्तृत योजना बनाने के लिए कहा।

जामोरिन की स्वीकृति पाकर बालू का उत्साह बहुत बढ़ गया। अब वह दिन-रात उसी काम में जुटा रहता। अपने काम की धुन में वह खाना-पीना भी भूल गया। वह एक छोटी-सी नाव में दूर-दूर तक निकल जाता। समुद्र के बीचोबीच बने छोटे-छोटे टापुओं को देखकर उसके मन में वहां किले बनवाने की

इच्छा जाग उठती। उसका मन करता कि पश्चिमी तट पर बिखरे इन वीरान टापुओं को समुद्री चौकियों का रूप दे दिया जाए। पर इसके लिए अपार धन, शक्ति और समय की आवश्यकता थी। वालू का विश्वास था कि एक-न-एक दिन उसका यह स्वप्न अवश्य साकार रूप धरेगा।

एक दिन वालू अपनी नाव में सवार बहुत दूर तक निकल गया। उसके साथ कान्हा भी था। कालीकट से चले उन्हें दस दिन हो चुके थे। नाव में अभी पांच-छः दिनों के लिए सामग्री और थी। वालू चाहता था कि वह और आगे निकल जाए।

एक दिन उसे एक निर्जन द्वीप पर कोई व्यक्ति नज़र आया जो हवा में अपनी पगड़ी फहराकर उन लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। वालू ने तुरन्त अपनी नाव उस ओर मोड़ दी। कुछ ही देर में वह कान्हा के साथ द्वीप पर जा पहुँचा। वह व्यक्ति बहुत दुर्बल दिखाई दे रहा था। लगता था जैसे उसने कई दिनों से कुछ नहीं खाया है। उसके चेहरे पर छायी भय की परतों को देखकर लगता था जैसे उसने कोई भयानक सपना देखा हो।

वालू ने उसे कुछ खाना दिया। जब वह कुछ स्वस्थ हुआ तो वालू ने पूछा, "तुम कौन हो? यहाँ कैसे आए? तुम्हारे साथी कहाँ हैं?"

उस व्यक्ति ने सिसकते हुए बताया, "मेरा नाम मोहम्मद इब्राहीम है। मैं अपने बीबी-बच्चों और बूढ़े माता पिता के साथ हज करके लौट रहा था। हमारे जहाज़ पर न तो कोई कीमती सामान था और न कोई फौजी। थे तो केवल बूढ़े यात्री, औरतें और छोटे-छोटे बच्चे।

"हम लोग खुदा का शुक्र मनाते हुए घर लौट रहे थे, क्योंकि राह में हमें न तो कोई समुद्री लुटेरे मिले और न मौसम ही बहुत खराब हुआ। पर हम नहीं जानते थे कि कयामत हमारा इन्तजार कर रही है। हम अभी अजद्वीप के निकट पहुँचे होंगे कि हम पर कुछ विदेशियों ने हमला कर दिया। उन्होंने एक-एक कर जहाज में बैठे सभी लोगों को मौत के घाट उतार दिया। औरतों ने रोकर उनसे फरियाद की, बच्चे चीखते-चिल्लाते रहे, बूढ़े उन विदेशियों को समझाते रहे कि हम बेगुनाह हैं, हमने किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा है, पर उन विदेशियों ने एक न सुनी। उन्होंने बूढ़ों और औरतों को ही नहीं, मासूम बच्चों के भी तलवारों से टुकड़े-टुकड़े कर दिये।

"दिन-भर जहाज पर भयानक मारकाट मची रही। हम कुछ लोग जहाज के एक गोदाम में छिप गये थे, इसलिए बच गये। कत्ले-आम कर वे लोग अपने जहाजों पर लौट गए। रात होते ही हम लोग भी छोटी-छोटी नावों पर सवार होकर भाग निकले।

"राह में हम लोग जुदा-जुदा हो गये। मैं भटकते-भटकते इस निर्जन द्वीप में आ पहुंचा। यदि आप लोग न आते तो शायद यहीं पड़ा-पड़ा मर जाता।"

मोहम्मद इब्राहीम की दर्दनाक कहानी सुनकर बालक राघव काँप उठा। उसने पूछा, "वे लोग कौन थे, कुछ मालूम है?"

मोहम्मद इब्राहीम ने कहा, "मेरे साथ जहाज पर एक अरबी सौदागर भी था। वह हिन्दुस्तान में ही बस गया था। उसने मुझे बतलाया कि ये लोग पुर्तगाली हैं, सौदागर के वेश में लुटेरे।"

पुर्तगाली!



वालू चौंक उठा। वे कहां से आ पहुंचे ? क्या कावराल लौट आया ? या फिर कोई और पुर्तगीजी सौदागर आ पहुंचा ?

वालू ने उसी समय कालीकट लौटने का फैसला किया। वह मोहम्मद इब्राहीम को साथ लेकर नाव में बैठ गया। कान्हा ने नाव कालीकट की ओर मोड़ दी।

रास्ते-भर वालू तरह-तरह के विचारों के सागर में डूबता-उतराता रहा। वह सोच रहा था कि कब वह कालीकट पहुंचे और जामोरिन को पुर्तगीजों की दुष्टतापूर्ण हरकतों की जानकारी दे।

दस-बारह दिनों की यात्रा के बाद जब वह कालीकट के बन्दरगाह पर उतरा तो उसे एक अजीब नजारा दिखायी दिया। बन्दरगाह पर पुर्तगीज जहाज खड़े थे और उनकी तोपों के मुंह शहर की ओर थे।

वालू स्थिति की गम्भीरता समझ गया। उसे आशंका हुई कि शायद जल्दी ही कोई लड़ाई यहां छिड़ जाए।

वह सीधे जामोरिन के पास पहुंचा। उस समय वह अपने मंत्रियों के साथ किसी गहरे सोच-विचार में डूबा हुआ था। वालू के आने की खबर पाते ही उसने उसे भी भीतर बुलवा लिया।

जामोरिन का गम्भीर चेहरा देखकर वालू स्तब्ध रह गया। उसने हिचकते हुए कहा, "महाराज !"

जामोरिन ने उसकी बात बीच में ही काटते हुए कहा, "वास्को फिर से लौट आया है। उसने मुझे धमकी दी है कि मैं कालीकट से अरबी और फारसी सौदागरों को निकाल दूं। मैंने उससे स्पष्ट कह दिया है कि यह नहीं हो सकता। इस पर वास्को ने मुझे धमकी दी है कि यदि मैंने बारह घंटे में उसकी

गया। वास्को की गोलाबारी से तट का तट जल उठा था। लोग अपने प्राणों की रक्षा के लिए इधर-उधर भाग रहे थे। उनकी चीख-पुकार से सारा वातावरण करुण हो उठा था।

बालू फौरन कूदकर एक नाव पर जा चढ़ा और गोलों की बौछारों से बचता, पुर्तगीज बेड़े की ओर बढ़ने लगा।

बन्दरगाह पर कुछ और भी जहाज खड़े थे। उनमें से कुछ अरबी और कुछ फारसी सौदागरों के थे। वास्को ने उन जहाजों पर भी गोले बरसाये थे। वे जहाज भी धू-धू कर जल उठे थे। उनमें बैठे मल्लाह जान बचाने के लिए समुद्र में कूदने लगे थे। वे सब तट की ओर बढ़ने की कोशिश में लगे थे। वास्को ने यह देखा तो उसने उन मल्लाहों को निशाना बनाकर गोलियां चलाने का आदेश दिया।

उधर बालू अपनी धुन में पुर्तगीज बेड़े की ओर बढ़ा जा रहा था, मानो उसे अपने प्राणों की रत्ती-भर भी परवाह नहीं हो। धीरे-धीरे वह एक पुर्तगीज जहाज के पास पहुंचने में सफल हो गया।

कालीकट के तट पर अभी भी गोलाबारी जारी थी। रोष में पागल वास्को आज जैसे पूरे कालीकट को तबाह करने पर तुला हुआ था। उसके सारे जहाजी भी मौत के इस खेल में उसका साथ दे रहे थे। उन्होंने बन्दरगाह के आसपास छोटी-छोटी नावों में मछलियां मारने के लिए जाते मछुओं को घेर लिया था और अब वे एक-एक कर उन्हें मौत के घाट उतार रहे थे।

बालू जहाज से लटकती एक मोटी रस्सी के सहारे ऊपर चढ़ने लगा। जैसे ही वह ऊपर पहुंचा [illegible]

जहाजी ने देख लिया। वह तलवार लेकर मारने के लिए उसकी ओर दौडा। पर बालू ने भी गजब की फुरती दिखायी। वह तुरन्त पुर्तगीजी भाषा मे जोरो से चिल्लाया, "दुश्मन नही, दोस्त।" वह जहाजी आश्चर्य-चकित होकर क्षण-भर के लिए रुक गया। बालू के लिए इतना समय काफी था। वह उस जहाजी पर चीते की तरह झपट पडा और अगले पल ही उसकी कटार उस जहाजी के सीने के पार हो गई।

'शुरुआत बुरी नही रही।' बालू ने मन-ही-मन कहा। फिर उसने उस जहाजी के कपडे उतारकर खुद पहन लिये और उसके शव को समुद्र मे फेककर वास्को की तलाश मे चल पडा।

जहाज पर इस समय बहुत शोरगुल था। तोपची तोपो मे गोले भर-भरकर समुद्र तट पर छोड रहे थे। सारा तट आग की लपटो और धुएँ की मोटी-मोटी चादरो के पीछे छिप-सा गया था। थोडी दूर बढने पर बालू को पाच-छ पुर्तगीजी जहाजियो का झुड मिला। वे पुर्तगीजी भाषा मे कोई गीत गाते हुए बालू की ओर ही आ रहे थे। बालू आड मे हो गया। वे जहाजी शायद नशे मे चूर थे क्योकि किसी ने भी बालू की ओर ध्यान नही दिया।

भद्दी गालियाँ दीं और कहा कि बहादुरी हमने दिखायी है, और तरक्की इन मूँजी ने पायी। ऐसा कभी नहीं हो सकता।

बस क्या था। अगले ही क्षण बात का बतंगड़ बन गया। पुर्तगीजियों ने तलवारें खींच लीं और वे आपस में ही लड़ने लगे।

बाबू को यह अच्छा अवसर जान पड़ा, वह चुपचाप खिसक गया। वह वास्को का पता लगाना चाहता था, पर किसी से पूछना भी खतरनाक था।

बाबू वास्को की खोज में जहाज पर इधर-उधर लुकता-छिपता घूम रहा था। एक स्थान पर उसने पुर्तगीजों द्वारा कत्ल किये गये बेगुनाह मछुओं की लाशों का ढेर लगा देखा। उसकी आँखों में खून उतर आया। अब तो वह वास्को से मिलने के लिए और बेचैन हो उठा।

पर वास्को उस समय उस जहाज में न था। दूसरे जहाज के निचले डेक में बने अपने कमरे में वह सारा कत्लेआम देख रहा था। इस तरह निर्मम हत्याकाण्ड मचाकर वह जामोरिन और दूसरे हिन्दुस्तानी राजाओं के मन में आतंक पैदा करना चाहता था।

सहसा वास्को के मन में एक विचार आया। उसने तुरन्त अपने एक अफसर को बुलवाया। जब वह आया तो उसने पूछा, "कितने मछुए मार डाले गये?"

अफसर ने बतलाया कि अब तक लगभग आठ सौ मछुए कत्ल कर दिये गये हैं।

यह सुनकर वास्को खिलखिला उठा। फिर घृणा भरे स्वर में बोला, "इन सारी लाशों को एक नाव में भरकर समुद्र के किनारे छोड़ दो। जामोरिन के लिए [illegible]

अच्छा और कोई संदेश नही होगा।"

अफसर ने सिर झुकाया और चला गया।

दो घटे बाद हिन्दुस्तानी मछुओ की लाशो से भरी एक नाव समुद्र की लहरो पर डोल रही थी। लहरे उसे कभी इधर ले जाती कभी उधर।

भयानक कत्लेआम के बाद वास्को ने जहाजो का लगर उठाने का आदेश दिया।

उधर वालू को भी पता लग गया था कि वास्को उस जहाज मे नही है। वह दूसरे जहाजो पर जाने की योजना बना रहा था कि जहाज धीरे-धीरे चलने लगे।

वालू सोच मे पड गया कि अब क्या करे। कालीकट लौट जाए या इसी जहाज पर छिपे-छिपे सफर करे।

काफी सोच-विचार के बाद उसने जहाज पर ही छिपे रहने का निश्चय किया। उसने सोचा, रास्ते मे कही-न-कही तो वास्को से भेट होगी। तब एक साथ सारा हिसाब चुकता कर लिया जाएगा।

अब वालू जहाज पर छिपा-छिपा सफर करने लगा। उसे स्वय पता नही था कि वह कहा जा रहा है। पर एक बात स्पष्ट थी कि वास्को इस समय पुर्तगाल नही जा रहा है, क्योकि जहाज समुद्री तट से लगे-लगे सफर कर रहे थे। वालू को अपने छिपने की जगह से हरा-भरा तट और ऊंचे-ऊंचे पेड साफ-साफ दिखायी पड रहे थे।

राजा के बीच चल आ रही शत्रुता से वास्को परिचित था। वह उनकी शत्रुता का लाभ उठाना चाहता था। उसका इरादा कोचीन पहुंचकर एक कारखाना खोलने का था। उसके बाद वह कन्नूर भी जाना चाहता था। उसके सामने बस एक ही लक्ष्य था कि भारत के सारे समुद्री व्यापार और मार्ग पर पुर्तगीजों का कब्जा हो जाए। इसमें उसे सफलता की भी उम्मीद थी। कोचीन का राजा उसके साथ था। कन्नूर का राजा भी उसके विरोध में नहीं था।

वास्को की एक और भी योजना थी। वह कोचीन, कन्नूर और पश्चिमी तट पर स्थित छोटे-छोटे द्वीपों में किले बनाना चाहता था ताकि पुर्तगीजों को कभी भागना पड़े तो पास ही आश्रय-स्थल मौजूद हो।

इधर वास्को समुद्री सफर में यह योजना बना रहा था, उधर बालू की बेसब्री बढ़ती जा रही थी। उसका कीमती समय छिपे-छिपे बरबाद हो रहा था। अन्त में बालू ने तय किया कि वह उसी रात तैरकर समुद्र तट पर पहुंचने की कोशिश करेगा। इसमें खतरा बहुत था, पर बालू को बेकार बैठने से यह खतरा उठाना ज्यादा भला मालूम पड़ रहा था।

बालू का वह सारा दिन बड़ी बेचैनी में कटा। वह रात का इन्तजार कर रहा था।

धीरे-धीरे शाम बीती और चारों ओर रात की काली चादर तन गयी। बालू अपने छिपने की जगह से निकला और चारों ओर समुद्र में एक नजर फेंकी।

अचानक उसे दूर, बहुत दूर कुछ प्रकाश नजर आया। बालू ने अन्दाज लगाया कि शायद निकट ही कोई बन्दरगाह

है। उसने सोचा, बन्दरगाह के आस-पास जहाज से कूदना ठीक रहेगा, तब शायद कोई मछुआ भी मिल जाए।

वालू फिर से अपने छिपने की जगह लौट आया।

जाने कितना समय बीत गया। सहसा वालू को लगा कि जहाज रुक गया है। उसने झाँककर देखा तो कुछ दूर पर काफी प्रकाश नजर आया। उसने कुछ बडे-बडे जहाज भी देखे। वालू समझ गया कि कोई बन्दरगाह आ गया है। उसने आसमान की ओर देखा। रात अभी काफी बाकी थी। वालू को यह बहुत अच्छा अवसर जान पडा।

वह अपने छिपने के स्थान से बाहर आया। जहाज़ पर सन्नाटा छाया हुआ था। जहाजी मल्लाहो को छोडकर सारे पुर्तगीज गहरी नींद मे सोये थे। वालू समुद्र मे कूद पडा। एक छपाक् की आवाज हुई और फिर सन्नाटा छा गया।

वालू को समुद्र मे तैरने का अच्छा अभ्यास था। वह धीरे-धीरे प्रकाश की दिशा मे बढने लगा। इस समय वह पुर्तगीज मल्लाह की वेशभूषा मे ही था। कुछ दूर जाने पर वालू को एक नाव दिखाई पडी। वह तैरते-तैरते उसके पास पहुँचा। उसने धीरे से नाव पकडी और फिर उछलकर उसमे बैठ गया। वालू के भार से नाव डगमगा उठी। उसमे बैठा मल्लाह हडबडाकर उठ बैठा।

सामने एक पुर्तगीज को देखकर उसकी चीख निकल गयी पर दूसरे क्षण ही पास पडा एक चाकू उठाकर वह उस पुर्तगीज की ओर झपट पडा।

वालू फुर्ती से उसका वार बचा गया। फिर उसने अपनी भाषा मे कहा, 'मै पुर्तगीजी नही, हिन्दुस्तानी हूँ।"

मल्लाह दुबारा चौंक उठा। बालू ने मुसकराकर अपने पुर्तगीजी कपड़े उतार दिये। मल्लाह को अब उस पर विश्वास हुआ। बालू ने उस मल्लाह को थोड़े में अपना परिचय दिया। उसने उसे पुर्तगीजी बर्बरता के बारे में भी बताया। बेगुनाह मल्लाहों के कत्लेआम की खबर ने उस मल्लाह को भी गुस्से से भर दिया। उसने बालू से कहा, "उन गोरों को भगाने के लिए तुम जो कहोगे मैं वही करूंगा।"

बिलकुल अपरिचित जगह में एक नये साथी को पाकर बालू बहुत खुश हुआ। उसने उसकी सहायता से उस नई जगह में पुर्तगीजों के खिलाफ वातावरण बनाने का फैसला कर लिया।

बालू के उस नये साथी का नाम अली था। अली ने बालू को बताया कि उस बन्दरगाह का नाम कोचीन है और यहां का राजा पुर्तगीजों का बड़ा खैरख्वाह है।

बालू ने उसे पुर्तगीजों द्वारा हज-यात्रियों के कत्लेआम की पूरी घटना सुनायी और कहा कि ऐसे लोगों की मदद करना एक बहुत बड़ा गुनाह है।

अली ने बालू को बताया कि पुर्तगीजों के इन अत्याचारों की कहानी कोचीन के बच्चे-बच्चे की जबान पर है और जनता हिन्दू और मुसलमान, सभी नाराज हैं। वे कोचीन के राजा के व्यवहार से भी नाराज हैं। पर राजा जामोरिन से डरता है और इसीलिए वह पुर्तगीजों से कुछ नहीं कहता बल्कि जामोरिन के खिलाफ उनकी सहायता के लिए भी तैयार है।

उन्हें उनके खिलाफ लडने के लिए तैयारी करने को कहता।

इधर वास्को कोचीन के राजा को जामोरिन से संघर्ष करने के लिए उकसा रहा था। वह उसे दिन-रात भडकाया करता। उसने कोचीन मे एक कारखाना खोलने की अनुमति भी प्राप्त कर ली थी। जब कोचीन पूरी तरह उसके वश मे हो गया तो वास्को ने कन्नूर जाने की ठानी और एक दिन वह कन्नूर रवाना हो गया।

जब तक वास्को कोचीन मे रहा, बालू के मन मे कई बार उसका कत्ल करने का इरादा हुआ। पर एक विचार बार-बार उसके हाथो को रोक देता, उसके पैर बाँध देता। बालू सोचता, वास्को की हत्या करने के बाद यदि वह पकडा गया तो फौरन ही उसे मौत के घाट उतार दिया जाएगा। तब पुर्तगीजो के खिलाफ लोगो को एकत्र करने के काम मे शायद कोई उतनी दिलचस्पी नही ले। अली की राय थी कि अकेले वास्को को मारने से काम नही चलेगा। वास्को मारा जाएगा तो उसकी जगह और कोई आ जाएगा। एक वास्को की जगह कोई दूसरा वास्को ले लेगा। इसलिए कुछ ऐसा किया जाए, जिससे पुर्तगीजो की जडे ही कट जाएँ।

बालू अली के इस तर्क से बहुत प्रभावित हुआ था। उसे लगा कि साधारण दिखाई देनेवाला यह मल्लाह बहुत ऊँची सूझ-बूझ रखता है। फिर भी जब बालू को वास्को के सही-सलामत कन्नूर के लिए निकल जाने की खबर मिली तो उसका मन गमगीन हो गया।

साथियों की मदद से वह रात-बिरात पुर्तगीजों पर धावे मारता, उन्हें लूटता, सताता और फिर गायब हो जाता। बालू ने पुर्तगीजों की कई नावें भी डुबो दी थीं।

पुर्तगीज, कोचीन के राजा के पास इसकी फरियाद करते, पर वह भी बालू और उसके साथियों के खिलाफ कुछ नहीं कर पाता। काली घटाओं वाले आसमान में कभी यहाँ, कभी वहाँ तरफ उठने वाली बिजली के समान बालू के साथी सहसा प्रकट होते और फिर उसी तरह गायब भी हो जाते।

संगठन ही शक्ति

कोचीन में रहते-रहते बालू को काफी समय हो गया था। इस बीच उसने काफी संख्या में लोगों को संगठित कर लिया था। वे सब पुर्तगीजों के खिलाफ कोचीन के राजा से भी लड़ने को तैयार थे।

एक दिन जब बालू अली के साथ बैठा अपनी अगली योजना बना रहा था, कुछ मल्लाहों ने आकर उसे एक सूचना दी। वह सूचना पाते ही बालू खुशी से उछल पड़ा। उसने अली से कहा, "दोस्त, जिस दिन का हमें इन्तजार था, वह अनायास ही आ गया है। तुम लोगों को तैयार होने के लिए कहो।"

बालू में जैसे किसी ने बिजली भर दी थी। उसकी आँखों के सामने एक सपना तैरने लगा। उसने सोचा, कोचीन के राजा को मदद दिलाने जामोरिन की सेना आ ही रही है, उधर जनता भी उसके साथ है। अब कोचीन के राजा को पुर्तगीजों की

सहायता करने से हमेशा के लिए रोका जा सकता है। उधर जामोरिन की सेना के आने की खबर कोचीन-नरेश को भी मिल चुकी थी। उसने कारखाने मे काम करने वाले पुर्तगीजो को बुलवाया और सहायता की याचना की। उन्होने उसे ढाढस बँधाया और कहा कि हम मरते दम तक आपकी मदद करेंगे। इससे कोचीन के राजा की हिम्मत बढी और उसने लडाई की तैयारी कर दी।

जल्दी ही दोनो सेनाओ मे लडाई छिड गयी। इधर बालू और उसके साथियो ने भी बगावत कर दी।

कोचीन का राजा परेशान हो उठा। उधर जामोरिन उससे बहुत चिढा हुआ था, वह उसे सबक सिखाना चाहता था। उसके सैनिको मे भी अपूर्व उत्साह था। वे कोचीन की फौज को हराते हुए तेजी के साथ राजधानी की ओर बढे आ रहे थे।

कोचीन मे इस समय दो दल हो गये थे—एक जामोरिन का समर्थक था, दूसरा कोचीन-नरेश का। इस मतभेद का कोचीन की सेना के मनोबल पर भी बुरा असर पडा था और वह हिम्मत हार चुकी थी।

जल्दी ही कोचीन के काफी बडे भाग पर जामोरिन की सेना का कब्जा हो गया। जामोरिन की सेना की विजय मे वालू की सूझ-बूझ का भी कम हाथ नही था।

अब कोचीन मे वालू का काम पूरा हो चुका था। उसने सोचा, यहाँ बैठे रहने के बजाय जामोरिन से मिलना और आगे की योजना बनाना ही ज्यादा उचित होगा।

वह जामोरिन के सेनापति से मिलने गया। जब उसे वालू के आने की खबर मिली तो वह उससे मिलने के लिए स्वय वाहर

आया। बालू को देखते ही उसने उसे गले से लगा लिया और कहा, 'हम लोग तो समझ रहे थे कि उस दिन की गोलाबारी में आप मारे गए। महाराजा ने आपका पता बहुत ढुंढवाया, पर पर जब वह भी नहीं मिला तो महाराजा के दुःख की सीमा न रही। तीन दिन तक उन्होंने भोजन भी नहीं किया।" सेनापति ने आगे कहा, "मैं आज ही आपके जीवित होने की खबर महाराजा



को भिजवाता हूँ। आपकी यात्रा की व्यवस्था करने का भी आदेश देता हूँ। आप नहीं जानते कि महाराज आपको पाकर कितना खुश होंगे।"

अपने प्रति जामोरिन का इतना स्नेह देखकर वालू का मन भर आया। उसने उसी रात कालीकट रवाना हो जाने का फैसला कर लिया।

मिलन की वेला

वालू कालीकट पहुँचा तो जामोरिन उसे जीवित देखकर बहुत खुश हुआ। उसने उसे गले से लगा लिया। वालू को लगा कि जैसे वह अपने किसी सगे-सम्बन्धी से मिल रहा है। नरभक्षी कान्हा को भी उसके आने की खबर मिल गयी थी। वह भी वालू से मिलने जामोरिन के महल में पहुँच गया था। उसका और वालू का मिलन देखकर लोगों की आंखों में आंसू आ गये।

कान्हा वालू को देखते ही उससे लिपटकर रोने लगा। उसकी आंखों से आंसुओं की धारा बह निकली। वालू भी उसे गले से लगाते ही सिसक उठा। पर उन दोनों की आंखों में दुःख के नहीं, हर्ष के आंसू थे। कान्हा ने भी वालू को मृत समझ लिया था। अब वह इतनी बड़ी दुनिया में स्वयं को अकेला ही समझ रहा था। पर परिस्थितियों ने उसे एक बार फिर वालू से मिला दिया था। वालू को पाकर कान्हा का खोया हुआ विश्वास फिर वापस लौटने लगा था।

वालू ने जामोरिन को बताया कि उसके साथ क्या-क्या गुजरा,

सब हाल सुनाया। उसने यह भी बताया कि कैसे वास्को ने आठ सौ बेगुनाह मल्लाहो का कत्ल कर उनकी लाशे एक नाव मे भरवा दी थीं और उसे सागर की लहरो पर भटकना छोड़ दिया था। उसने उसे यह भी बतलाया कि कैसे उस गोलाबारी के बीच भी वह वास्को के एक जहाज पर पहुचने मे सफल हो गया।

जामोरिन ने बाबू को बताया कि बहुत दिनो बाद वह नाव कालीकट से दूर तट पर जा लगी थी। लाशे सड़कर फूल गयी थीं। उसी दिन कालीकट-वासियो ने शपथ ली थी कि वे वास्को से उस कत्लेआम का एक-न-एक दिन अवश्य बदला लेगे। जामोरिन ने कहा कि इसीलिए मैने कोचीन पर चढ़ाई भी की थी।

बाबू ने कहा, "महाराज, हमे कोचीन पर नजर रखनी होगी। मुझे तो लगता है कि हमारे मजबूत किले मे वही एक कच्ची ईंट सिद्ध होगा।"

जामोरिन ने बहुत गम्भीरता से कहा, "मैं यह जानता हू। यह भी जानता हू कि उसकी पीठ पर पुर्तगालियो का हाथ है। पर चाहे सारी दुनिया उसकी सहायता के लिए आ जाए, वह बचकर नहीं जा पायेगा।"

जामोरिन की बातो से बाबू का उत्साह दुगुना हो गया। उसने जामोरिन की नौसेना को सगठित करने का कार्य फिर से शुरू कर दिया।

उधर कोचीन के मोर्चे पर भीषण लड़ाई जारी थी। बाबू और उसके साथियो की मदद से जामोरिन की सेना ने कोचीन की ईंट से ईंट बजा दी। कोचीन की सेना हार की कगार पर टिकी थी। बस, अब एक अन्तिम वार की आवश्यकता थी। जामोरिन का सेनापति इसी अन्तिम चोट की तैयारी मे लगा

हुआ था कि उसे एक बहुत ही चिन्ताजनक खबर मिली। उसके गुप्तचरो ने सूचना दी कि एक पुर्तगाली बेडा बहुत तेजी के साथ इसी ओर बढा आ रहा है और वह कुछ ही समय मे कोचीन पहुँच जाएगा।

कोचीन-नरेश को भी पुर्तगालियो के आने की खबर मिल चुकी थी। वह जानता था कि पुर्तगालियो के कोचीन पहुंचते ही लडाई का रुख बदलने लगेगा।

और, हुआ भी यही। जैसे ही पुर्तगीजी बेडा कोचीन के तट पर लगा, जग का रग बदलने लगा। इस बेडे के सेनापति का नाम फ्रासिस्को था। फ्रासिस्को ने जामोरिन की सेना से लडते हुए भी कोचीन मे एक मजबूत किले का निर्माण शुरू कर दिया। यह हिन्दुस्तान मे पहला पुर्तगीजी किला था।

कुछ ही दिनो मे एक और पुर्तगीजी बेडा कोचीन के तट पर आ लगा। इसके सेनापति का नाम अलफासो था। उसके आगमन ने जामोरिन के सेनापति को सारी स्थिति पर फिर से विचार करने को विवश कर दिया। उसने तत्काल जामोरिन को सारी स्थिति की सूचना भिजवायी और आदेश मांगा। उसने अपनी ओर से राजा को सलाह दी—'चूकि इस समय कोचीन के साथ पुर्तगीज भी आ मिले हैं, अत अब तो सधि करने मे ही भलाई है। लेकिन बाद मे शक्ति एकत्र कर हम उन्हे भगा सकते है।

जामोरिन ने बालू से भी परामर्श किया। बालू ने कहा, "महाराज, एक बार पुर्तगीज पैर जमा लेगे तो उनका वापस लौटना कठिन होगा। पर इस समय सिवा समझौते के कोई चारा भी नही है। आप सेनापति को सधि की सूचना भिजवा

दे। हम अपनी सुविधा और समय के अनुसार पुर्तगीजियों से निपटेंगे।'

इसी योजना के अनुसार काम किया गया और जामोरिन ने कोचीन-नरेश से संधि का पुर्तगीजी प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

बालू ने सेनापति के जरिए अली और उसके साथियों को खबर भिजवायी कि वे इस संधि से निराश नहीं हों और पुर्तगीजों की कार्रवाइयों पर नजर रखें। अतः अली और उसके साथी मजदूरों का वेश बनाकर पुर्तगीजी कारखानों में काम करने लगे। उन्हें जो भी नयी बात पता लगती, वे तुरन्त बालू को उसकी सूचना पहुँचा देते।

इन खबरों को पाकर बालू की चिन्ता बढ़ती ही जाती थी। अली ने उसे एक बार सूचना भेजी कि लगभग पन्द्रह-सौ सैनिकों के साथ एक पुर्तगीजी सेनापति कोचीन में आया है। उसका नाम फ्रांसिस्को अलमीडा है। अलमीडा ने आते ही मालाबार-तट के छोटे-छोटे द्वीपों और बन्दरगाहों पर किले बनवाने का काम शुरू कर दिया है।

बालू ने जामोरिन को अली से मिली सूचनाएँ बतायीं। फिर उसने कहा, "महाराज, अब देर करने का मौका नहीं है। यदि हमने इन समस्त पुर्तगीजों को नहीं मार भगाया तो वे सदा के लिए नासूर बनकर रह जायेंगे।"

राजा ने उसी समय अपनी मंत्रि-परिषद् की बैठक बुलायी। बैठक में सारी स्थिति पर बारीकी से विचार किया गया। सभी बालू की बात से सहमत थे। जामोरिन भी उससे सहमत था। वह चाहता था कि पुर्तगीजों से [illegible]

मूर्खता होगी, इसलिए गुजरात के सुल्तान और अन्य लोगो को भी इस युद्ध मे शामिल होने का निमत्रण दिया जाए।

जामोरिन का विचार ठीक था। मन्त्रि-परिषद् की सहमति पाते ही जामोरिन ने फौरन दि्यू के गवर्नर मलिक अज के नाम एक सन्देश लिखवाया।

जामोरिन ने उसे पुर्तगीजो की सारी हरकतो की सूचना दी और लिखा कि मलिक अज गुजरात के बदरगाहो पर पुर्तगीज जहाजो को जब्त कर ले। अगर पुर्तगीज उस पर आक्रमण करने आएँगे तो जामोरिन का नौ-सैनिक बेडा उसे राह मे ही रोक लेगा।

पुर्तगीजी कार्रवाइयो से और भी लोग परेशान थे। इनमे से एक कैरो का सुल्तान भी था। उसने मीर होमेज नामक अपने एक सेनापति के आधीन एक बहुत बडा समुद्री बेडा भारत की ओर भेजा ताकि पुर्तगीजो का सफाया किया जा सके, क्योकि पुर्तगीजी कारवाईयो से सबसे अधिक नुकसान उसे ही हुआ था।

जब जामोरिन का सन्देश मलिक अज के पास पहुँचा, तब मीर होमेज भी वही था। उसने भी जामोरिन के प्रस्ताव का अनुमोदन किया। तय हुआ कि तीनो समुद्री शक्तियाँ मिलकर पुर्तगीजो का खात्मा करके ही दम लेगी।

जामोरिन को इसकी सूचना भेज दी गयी।

अब क्या था! जोर-शोर से युद्ध की तैयारियाँ होने लगी।

जामोरिन की नौ-सेना का मनोबल बहुत ऊँचा था। उसके प्रत्येक सैनिक के मन मे प्रतिशोध की ज्वाला प्रज्ज्वलित थी। वे

पुर्तगीजों से अपने देशवासियों के खून का बदला लेने के लिए आतुर थे।

उधर पुर्तगीजों को भी लड़ाई की उन तैयारियों की खबर मिल चुकी थी। अलमीडा बहुत परेशान था। वह जानता था कि यदि तीनों समुद्री शक्तियां मिल गयी तब तो समुद्र में ही पुर्तगीजों की कब्र बन जाएगी। उसने एक-एक से अलग-अलग निपटने की योजना बनायी। उसने इस युद्ध में धोखाधड़ी और आतंक से भी काम लेने का फैसला किया।

अलमीडा ने अपने लड़के को बुलाया। उसका नाम डान लारेंस था। उसने उसके नेतृत्व में एक समुद्री बेड़ा मीर हुसेन के बेड़े को रोकने के लिए भेजा। डान लारेंस ने राह में अपने जहाज से पुर्तगीजी झंडे उतार दिए और उनके स्थान पर जामोरिन के झंडे लगा दिये।

उसकी यह चाल काम कर गयी। मीर हुसेन के नाविकों ने पुर्तगीजी जहाजों को अपना दोस्त समझा। और, जब उन्हें उनका असली परिचय मिला तब बहुत देर हो चुकी थी। डान लारेंस ने मीर हुसेन के एक-एक मल्लाह को मौत के घाट उतार दिया।

वह और आगे बढ़ना चाहता था कि उसे घबराने वाली एक खबर मिली। उसे पता चला कि दाभोल के पास जामोरिन का एक बड़ा समुद्री बेड़ा एकत्र है और वह उसी की ओर बढ़ा आ रहा है। यह खबर पाते ही डान लारेंस [illegible] और वह फौरन पीछे लौट पड़ा।

पर असली डर [illegible] डान लारेंस [illegible]। इसलिए राह में उसे [illegible] हिन्दुस्तानी मल्लाह मिले, [illegible]

वह मौत के घाट उतारता वापस लौटने लगा। लारेंस को यह पलायन बहुत खल रहा था। हारकर उसने कुछ दिन समुद्र मे ही रुकने का निश्चय किया।

इस बीच कन्नूर मे एक घटना घट गयी। लारेंस के एक कप्तान ने वहाँ से गुजरते हुए एक जहाज़ पर कब्जा कर लिया और उसमे बैठे सारे लोगो को कत्ल कर दिया। जहाज पर एक भी व्यक्ति जिन्दा नही बचा। फिर कप्तान ने उन सारी लाशो को समुद्र मे फिकवा दिया।

समुद्र को भी पुर्तगीजो की यह बर्बरता पसन्द नही आयी। उसने अपनी लहरो की बाँहो मे ये लाशें उठाकर कन्नूर के तट पर ला रख दी।

समुद्र तट पर एक साथ इतनी लाशे देखकर लोग भयभीत हो उठे। राजा को भी इसकी खबर भिजवायी गयी। वह आग-बबूला हो उठा। उसने उसी समय पुर्तगीजो से अपने सम्बन्ध तोड़ देने की घोषणा की।

पुर्तगीजो की बर्बरता की यह कहानी सारे पश्चिमी समुद्र तट पर फैल गयी थी। मछलियां मारते मछुए, नाव खेते मल्लाह, जहाजो पर सफर करते सौदागर—सभी की ज़बान पर इस घटना की चर्चा थी। कालीकट के जामोरिन को भी यह खबर मिली। उसे अपने गुप्तचरो से कन्नूर के राजा द्वारा उठाए हुए कदम की जानकारी भी मिल गयी थी। कन्नूर के राजा ने पुर्तगीजो के साथ दो-दो हाथ करने का निश्चय कर लिया था। जामोरिन को यह भी पता चला कि कन्नूर के राजा ने ओणम त्योहार से पहले-पहले पुर्तगीजो से लड़ने की योजना बना ली है। जामोरिन ने उसी समय कन्नूर के राजा

की सहायता के लिए अपनी फौज भेजने का फैसला कर लिया।

जामोरिन के इस निर्णय से कालीकट में हर्ष की लहर दौड़ गई। कालीकट के लोगों की आँखों के आगे गामा द्वारा की गयी गोलाबारी, वास्को के इशारे पर हुआ कत्लेआम और बेगुनाह मल्लाहों की लाशों से भरी डोलती नाव घूम गयी। वे सब पुर्तगीजों के साथ इस संघर्ष को अपना धर्म-युद्ध समझने लगे। हर घर से एक-एक व्यक्ति कन्नूर की लड़ाई में शामिल होने के लिए तैयार हो गया।

ऐसे अवसर पर बालू भला कैसे पीछे रहता। वह भी जामोरिन की सेना के साथ कन्नूर की ओर चला।

कालीकट की सेना में अपूर्व उत्साह था। जब वह कन्नूर पहुँची तो वहाँ के साठ हजार नायर पुर्तगीजों पर आक्रमण करने के लिए तैयार बैठे थे। कालीकट के बीस हजार नौजवान जब उनमें जा मिले तो उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा।

अब देर करना व्यर्थ था। कन्नूर के राजा का निर्देश मिलते ही अस्सी हजार बहादुरों की यह सेना पुर्तगीजों पर टूटने के लिए आतुर हो उठी। पर राजा व्यर्थ की मारकाट से बचना चाहता था। उसने पुर्तगीजों को घेर लेने का आदेश दिया।

पुर्तगीज किले के चारों ओर घेरा पड़ गया। उधर किले के पुर्तगीजों में भी उत्साह था। उन्हें भरोसा था कि सहायता के लिए कुमुक आ ही जाएगी। उन्होंने भी घेरा तोड़ने की कोई कोशिश नहीं की।

पर अजगर की जकड़ की तरह घेरा और भी कसता जाता रहा, उधर पुर्तगीजों के पास खाने-पीने का सामान भी खत्म हो

गया। अब उन्हे जीवन के लाले पड गये। पुर्तगीज़ो को उम्मीद थी कि कुमुक जल्दी ही आ जाएगी। वे कन्नूर की फौज का सामना करने से भी बचना चाहते थे। उन्हे मालूम था कि लड़ाई होते ही घेरा डाले पडी इतनी बडी फौज उन्हे गाजर-मूली की तरह काट डालेगी। उन्होने सहायता के लिए राह देखने मे ही भलाई समझी। पर उधर किले मे खाने-पीने का ज़रा भी सामान नही बचा था। हारकर पुर्तगीजो ने गोदामो मे दौडते-फिरते चूहो और दूसरे जानवरो को अपना भोजन बनाना शुरु किया।

उधर बालू को आक्रमण मे विलम्ब बहुत अखर रहा था। उसने कन्नूर के राजा से मिलने का निश्चय किया।

कन्नूर का राजा बालू से मिलकर बहुत खुश हुआ। वह उसकी बहुत तारीफ सुन चुका था। बालू ने राजा से कहा, 'मेरे विचार से पुर्तगीज़ी किले पर आक्रमण करने मे अब देर नही करनी चाहिए। यदि उनकी सहायता के लिए कोई बेडा आ पहुँचा तब बाजी पलटते देर नही लगेगी।"

बालू की सलाह राजा को उचित जान पडी। उसने उसी दम किले पर आक्रमण करने का हुक्म दे दिया।

इस हुक्म से कन्नूर की सेना को बडी राहत मिली। वह भी पडे-पडे तंग आ गयी थी। राजा का हुक्म पाते ही वह पुर्तगीज़ी किले पर टिड्डी दल की भाँति टूट पडी। किले के पुर्तगीजो का मनोबल तो पहले ही टूटा हुआ था। टूटे हुए मनोबल [illegible]ते। अन्त मे उन्होने हार मान ली।

पुर्तगीजो की इस हार से बालू के बेचैन मन को कुछ शान्ति मिली। अब उसके लिए कन्नूर मे रहना बेकार था।

वह कालीकट लौट पड़ा। कालीकट पहुँचने पर बालू को कई नये समाचार सुनने को मिले। उसे पता चला कि चाहुल के पास एक समुद्री लड़ाई में पुर्तगीजी सेनापति अलमीडा का बेटा लारेन्स मारा गया। लारेन्स, गुजरात और कालीकट के जहाजों पर आक्रमण करने के लिए निकला था। रास्ते में उसे चाहुल के पास कैरो का समुद्री बेड़ा मिल गया। लारेन्स ने पहले उसी पर आक्रमण कर दिया। कैरो का समुद्री बेड़ा असावधान था। लारेन्स के आगे उसकी एक न चली, पर तभी गुजरात से मलिक अज अपने समुद्री बेड़े के साथ आ धमका। अब तो लारेन्स को लेने के देने पड़ गये। उसने भागने की कोशिश की पर मलिक अज ने उसे धर दबोचा। अब लारेन्स के सामने सिवा लड़ाई लड़ने के कोई चारा नहीं था। इसी लड़ाई में वह मारा गया।

इस घटना की पूरी जानकारी पाकर बालू को प्रसन्नता के साथ-साथ चिन्ता भी हुई। उसने जामोरिन से भेंट कर उसके सामने अपनी आशंका व्यक्त की। बालू ने कहा—"महाराज, अपने बेटे की मौत की खबर पाकर अलमीडा पागल हो उठेगा। हमें उसका सामना करने की अभी से तैयारी करनी चाहिए।"

बालू अभी जामोरिन से यह कह ही रहा था कि मंत्री ने आकर एक चिन्ताजनक खबर दी। मंत्री ने बतलाया कि [illegible] में दूर से एक पुर्तगीजी बेड़े के अचानक आ पहुँचने से [illegible] हालत खराब हो गयी और अब [illegible] पूर के राजा ने [illegible] लिया है। इस नये पुर्तगीजी बेड़े [illegible] नाम [illegible] रहा है।

बालू समझ गया कि अब पुर्तगीजों का मुकाबला [illegible]

होने मे देर नही लगेगी। जामोरिन भी यह बात समझ गया था। इसीलिए वह कुछ चिन्तित-सा हो उठा था। यह देखकर वालू ने उसे समझाया, "महाराज, खतरे से निपटने का आसान तरीका आगे बढकर उस पर हमला करना है। चिन्ता धीरे-धीरे हममे भय उत्पन्न करेगी और भय हमे कमजोर बनाएगा।"

कालीकट मे लडाई की जोर-शोर से तैयारी होने लगी। वालू रात-रातभर जागकर पुर्तगीजो का भगाने का उपाय सोचा करता। कभी वह पूरे पश्चिमी तट के राजाओ को एक झडे के नीचे लाने की बात सोचता तो कभी अरबी-फारसी सौदागरो और सुल्तानो की सहायता से विदेशियो के बेडो को समुद्र मे ही डुबो देने का स्वप्न देखा करता।

वालू ने कभी पश्चिमी तट से लगे-लगे द्वीपो पर छोटे-छोटे किले बनाने का स्वप्न देखा था। उसका यह स्वप्न पुर्तगीजो ने अपनी सुरक्षा के लिए पूरा किया था। उन्होने इन छोटे-छोटे द्वीपो पर किले बनाकर अपने पैर मजबूत कर लिए थे। इसलिए वालू को लगता था कि अब पुर्तगीजो का भगाना पहले जैसा आसान नही रहा। फिर भी वह हिम्मत नही हारना चाहता था।

वह अपनी पूरी शक्ति से कालीकट के समुद्री बेडे को मजबूत करने मे लगा था। एक दिन वालू बन्दरगाह पर खडा हुआ कुछ अधिकारियो से बात कर रहा था, तभी उसे तट की ओर एक बडी-सी नाव आती दिखाई दी। नाव की बनावट देखते ही वालू उसे पहचान गया। वह नाव मिस्र की बनी जान पडती थी। वालू उत्सुकता से नाव के तट पर लगने की बाट जोहने लगा।

थोड़ी देर बाद जब नाव किनारे से लगी तो उसमें से एक व्यक्ति बैसाखियों के सहारे नीचे उतरा। उसके सिर पर पट्टी बँधी हुई थी। वेशभूषा से वह कोई सौदागर जान पड़ता था।

बालू फौरन उसके पास जा पहुँचा। उसने उससे पूछा, "आप कहाँ से आ रहे हैं ?

आगन्तुक व्यक्ति ने बड़ी कठिनता से उत्तर दिया, "मैं आपको सब-कुछ बतलाऊँगा। पर मेहरबानी करके पहले मेरे साथियों को बचाइए।" इतना कहकर उसने नाव की ओर इशारा किया।

बालू ने नाव पर जाकर देखा तो लगभग दस व्यक्ति बुरी तरह घायल अवस्था में पड़े थे। बालू ने अधिकारियों को फौरन उनकी चिकित्सा का प्रबन्ध करने का आदेश दिया। फिर उसने पूछा, "आप सबकी यह हालत किसने की ?"

"अलमीदा ने।" उस घायल व्यक्ति ने बताया। फिर उसने बड़ी मुश्किल से धीरे-धीरे अपनी दर्दनाक कहानी सुनायी।

उसने कहा, "अलमीदा को तो आप जानते ही होंगे। वही पुर्तगाली बेड़े का मालिक। उसी ने हम सबकी यह हालत की है। खुदा का शुक्र है कि हम बच गये, मगर कइयों की तो उसने मरने के बाद भी बहुत दुर्गत की है।"

बालू बोला, "मैं इसी बात की आशंका कर रहा था। मैंने पहले ही कहा था कि अपने बेड़े की मात से अलमीदा तिलमिला उठेगा और बुरी तरह बदला लेगा।"

"हाँ, हुज़ूर, दरअसल [illegible] [illegible] है कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।"

हमारे बेड़ों के मीर मोजेम के बेड़े से हुआ।

जलसेना ने इन दोनों के बेड़ों पर बड़ी भयानक गोला-बारी की। ओफ! जैसे कयामत की रात आ गयी। मलिक अज और मीर मोजेम के बेड़े समुद्र की छाती पर ऐसे जल रहे थे, मानो किसी ने जगह-जगह अलाव जला दिये हों। पहले तो



अलमीडा ने दोनों बेड़े के लोगों को चुन-चुनकर कत्ल किया। उसके बाद उसने उनमें आग लगवा दी। उफ़! वह खौफ़नाक नजारा याद आते ही मेरे तो रोएँ काँप उठते हैं। हम लोग बहुत मुश्किल से बच पाए। हमने पन्द्रह तीस पुर्तगीज सिपाहियों को अपने पास का सब-कुछ दे दिया, फिर भी उन्होंने हमें लाचार कर दिया और बाद में उस नाव में डाल दिया। हम लोग किसी तरह भटकते-भटकते यहाँ आ लगे हैं।"

फिर उसने पूछा, "जनाब, यह कौन-सी जगह है?"

"कालीकट!" बालू ने उत्तर दिया।

उस मिस्री सौदागर की बातों ने बालू को चिन्ता में डाल दिया था। वह सोच रहा था, अलमीडा ने मलिक अयाज और मीर मालेम की कमर तोड़ दी है। अब वह जामोरिन पर अवश्य हमला करेगा।

उसकी आँखों के सामने एक भयानक संघर्ष का काल्पनिक चित्र घूम गया।

वह चिन्तित-सा घर लौट आया।

मे अपने गुप्तचर छोड रखे थे। वे उसे उनकी गतिविधियो की बराबर सूचनाएँ देते रहते थे।

एक दिन बालू को खबर मिली कि पुर्तगीजी अधिकारियो मे आपस मे ही नही बन रही है। अलमीडा ने अपनी जगह नये बनने वाले गवर्नर अलबुकर्क को ही कैद कर लिया है। बालू ने सोचा, यदि इन दोनो अधिकारियो को आपस मे लडा दिया जाय तो पुर्तगीजो की काफी शक्ति क्षीण हो जाएगी।

उसने जामोरिन को इन सब घटनाओ की जानकारी दी और स्वय जाकर पुर्तगीजो मे फूट डालने की तैयारी करने लगा।

बालू रवाना होने ही वाला था, तभी उसे अपने गुप्तचरो का सदेश मिला कि पुर्तगीजो का सबसे बडा अफसर मार्शल कुन्हा पुर्तगाल से कन्नूर पहुँच गया है और उसने अलबुकर्क को रिहा कर गवर्नर बना दिया है।

कुछ ही दिनो बाद बालू को मार्शल के बारे मे और जानकारी मिली। उसे बतलाया गया कि पुर्तगाल के राजा ने मार्शल को एक खास काम से हिन्दुस्तान भेजा है, और यह काम किसी भी कीमत पर कालीकट को नेस्तनाबूद करना है।

यह खबर पाते ही बालू जामोरिन से मिला। उसने उसे बतलाया कि हमे पुर्तगीजो से सघर्ष के लिए तैयार हो जाना चाहिए। इस बात पर दो मत हो ही नही सकते थे।

कालीकट मे अब चारो ओर युद्ध की तैयारिया होने लगी। बालू ने तट पर रहने वाले सारे लोगो को वहा से हटवाकर दूसरे स्थान पर भिजवा दिया। कालीकट मे अभी युद्ध की तैयारिया चल ही रही थी कि मार्शल अपने जहाजी बेडो के साथ आ धमका।

बालू को जब यह खबर मिली, वह कालीकट से दूर रक्षा-

शक्ति मजबूत करने के काम में लगा था। पुर्तगीजी-आक्रमण की सूचना पाते ही वह कालीकट लौट पड़ा।

कालीकट में चारों ओर उत्साह का वातावरण था। जामोरिन के समुद्री गुप्तचरों ने उसे सूचना भिजवायी थी कि पुर्तगीजी बेड़ा बहुत बड़ा है। उसमें हजारों सैनिक हैं। वे सब गोला-बारूद से लैस हैं।

बाल यह खबर सुनकर परेशान हो उठा। वह चाहता था कि पुर्तगीजों से तट पर लड़ने की बजाय बीच समुद्र में लोहा लिया जाए, पर यह सम्भव नहीं था। उसका सबसे बड़ा कारण हिन्दुस्तानी जहाजों का कमजोर होना था। बाल को यह पता था कि हिन्दुस्तानी जहाज तट पर ही लड़ने के काबिल हैं। वे बीच गहरे समुद्र में जाकर नहीं लड़ सकते। उसने कई बार जामोरिन को इस बारे में समझाया था, पर जामोरिन के कट्टर मन्त्री और समुद्री सेनापति पुराने तौर-तरीके पर अधिक विश्वास रखते थे।

अब क्या हो सकता था!

दूरबीन आँखों पर लगा ली।

सहसा जैसे किसी ने उसकी आँखों के सामने ... जहाज लाकर खड़ा कर दिया। बालू ने एक बार ... देखा। एक बहुत बड़ा जहाज धीरे-धीरे बढ़ता ... था।

बालू फौरन जामोरिन से मिलने के लिए भागा। ... ने पुर्तगीज़ों के आने की खबर सुनी तो तुरन्त ... युद्ध के लिए तैयार होने का आदेश दिया। उसने ... की पोशाक पहन ली।

बालू भी एक योद्धा के वेश में सज गया। वह ... कि पुर्तगीज़ों का यह हमला बहुत खतरनाक है। कहीं ... को पराजित न होना पड़े। पर उसने अपनी यह आशंका किसी से भी नहीं कही। वह जानता था कि संकट के समय इस तरह की बातों से लोगों का मनोबल टूटता है और वीर से वीर व्यक्ति भी भीरु बन जाते हैं। वह लोगों में उत्साह भरता हुआ पुर्तगीज़ों से मुकाबले की तैयारी करने लगा।

उसके देखते देखते पुर्तगीज़ी बेड़े ने गोलाबारी शुरू कर दी। बड़े-बड़े गोले आकर तट पर गिरने लगे। सारा तट धू-धू कर जलने लगा। पुर्तगीज़ी तोपची कुशल निशानेबाज मालूम पड़ते थे। उनके गोलों की मार से तट पर खड़े जामोरिन के ... उड़ने लगे थे। उन्हें आगे बढ़कर पुर्तगीज़ी बेड़े से जूझने का अवसर ही नहीं मिल पाया था। बालू की आशंका सच निकली थी, यह समय किन्तु गलती पर पछताने का नहीं था।

बालू ने जामोरिन से कहा, "महाराज, अब समुद्र पर उनसे ... बेकार है। उन्हें तट पर आने दें।"

जामोरिन अपने समुद्री बेडे के नष्ट हो जाने से कुछ उदास-सा हो गया था। यह देखकर बालू ने कहा, "महाराज, उदास न हों। अगर हमने आज उन्हें भगा दिया तो हम एक नया बेड़ा शीघ्र तैयार कर लेंगे। आज तो हमारे सामने पहला काम उन्हें मार भगाना है।"

उधर मार्शल के जहाज कालीकट के तट पर आ लगे थे। कालीकट के सैनिकों ने अब मोर्चा सँभाल लिया था। पुर्तगीजी भी हिम्मत से लड रहे थे। स्वय मार्शल उनका साहस बढा रहा था। मार्शल चालाक था। वह कुछ सैनिकों को लेकर स्वय जामोरिन के महल की ओर बढने लगा। बालू की तेज नजरें मार्शल के पीछे ही थीं। वह उसका इरादा भाँप गया। वह जामोरिन से बोला, "महाराज, आज मैं उस पुर्तगीजी बच्चे से पिछला सारा हिसाब चुकाऊंगा। वास्को न सही, मार्शल सही।"

जामोरिन जानता था कि बालू को रोकना बेकार है। बालू की रक्षा के लिए उसने अपने कुछ जाबाज सैनिक भेज दिये।

मार्शल को देखते ही बालू के मन में क्रोध का सागर हिलोरें लेने लगा था। उसे पुर्तगीजों के जुल्म की एक एक कहानी याद आने लगी थी। उसकी आँखों के सामने वास्को द्वारा किया गया कत्ले-आम घूम रहा था। उसके कानों में पुर्तगीजी अत्याचारों के शिकार बेगुनाह लोगों की चीखें गूंज उठी थीं। उसे लग रहा था, जैसे प्रत्येक चीख उसे अपनी हत्या का बदला लेने के लिए कसम दिला रही है।

बालू का हाथ तलवार की मूठ पर जा पड़ा। उसने मन ही मन कसम खायी कि 'आज मार्शल जिन्दा रहेगा या मैं।'

बालू की आँखों में खून उतर आया था। वह चाहता था

कि मार्शल से जितनी जल्दी दो-दो हाथ हो जाएँ, अच्छा है। वह तेजी से अकेला ही उसकी टुकडी के पीछे दौड पडा।

सहसा किसी ने पीछे से उसे आवाज दी। बालू ने मुडकर देखा, नरभक्षी कान्हा कुछ सैनिको के साथ दौडा आ रहा था। बालू उन्हे देखकर ठिठक गया।

कान्हा ने बालू के पास आकर कहा, "आप कैसी भयानक गलती करने जा रहे है । क्या आप अकेले उस पुर्तगीजी से लड सकते हैं ? इस तरह बिना सोचे-समझे जा भिडने से तो हमारी ही हानि होगी।"

कान्हा का कहना ठीक था। बालू वही रुककर मार्शल के साथ युद्ध की योजना बनाने लगा।

उसने कान्हा से कहा, "मैं शीघ्र ही कुछ सैनिको के साथ महल की ओर पहुँचता हूँ। तुम पीछे से काफी बडी टुकडी लेकर आओ। ईश्वर ने चाहा तो आज मार्शल जिन्दा बचकर नही जा सकेगा।"

यह कहकर बालू कुछ चुने हुए सैनिको के साथ महल की ओर दौड पटा। आज जैसे उन सबके पैरो मे पख लग गये थे। दान की दान मे वे सब महल मे जा पहुँचे। बालू ने कुछ लोगो को महल के द्वार के पास छिपा दिया। उसने उनसे कहा, "पुर्तगीजो के पास बन्दूके भी जरूर होगी। तुम लोगो की यही कोशिश होनी चाहिए कि उनकी सारी गोलियाँ यही बेकार हो जाएँ। इसके लिए कुछ कुरबानियाँ भी देनी पडे तो हिचकना नही।"

फिर वह स्वय एक ऐसे गुप्त स्थान मे छिपकर खडा हो गया जहाँ से महल की ओर आने वाले सारे रास्तो पर नजर

रखी जा सकती थी।

बालू वहीं खड़ा-खड़ा मार्शल की बाट जोहने लगा। अब उसे एक-एक पल भारी पड़ रहा था।

अचानक उसके कानों में कुछ आवाजें सुनायी पड़ीं। उसने सिर उठाकर देखा तो उसे पुर्तगीजी सैनिकों की टुकड़ी दिखायी दी। बालू ने तुरन्त सीटी बजाकर अपने साथियों को सावधान कर दिया। वे सब आक्रमण के लिए तत्पर चीतों की तरह तैयार हो गये। जैसे ही पुर्तगीजी सैनिकों की टुकड़ी कुछ दूरी में आयी, बालू ने फिर सीटी बजायी। अगले ही क्षण तीरों की बौछार होने लगी जिसने पुर्तगीजी सैनिकों को घेर डाला। अचानक हुए आक्रमण से पुर्तगीजी चौंक उठे। उन्होंने तुरन्त मोर्चा सम्भाल लिया।

अब क्या था!

लड़ाई छिड़ गयी। द्वार पर छिपे बालू के साथियों ने तीरों और भालों की बौछारों से पुर्तगीजों की नाक में दम कर दिया। वे अब द्वार पर ही अपनी गोलियाँ चलाने लगे। इधर बालू के साथी भी गोलाबारी करने लगे।

पुर्तगीजों ने जोर-शोर से अपना सारा गोला-बारूद खत्म कर दिया। बालू ने यह जानते ही सीटी बजायी और उसके साथ ही द्वार पर छिपे उसके साथियों ने तीरों की बौछार में कमी करनी शुरू कर दी। इसके साथ-साथ वे घायल होने का अभिनय करते हुए चीखने-चिल्लाने भी लगे।

मार्शल ने समझा कि द्वार पर मोर्चा ले रहे लोग या तो भाग गये हैं, या फिर घायल होकर गिर पड़े हैं। वह अपने सैनिकों का नेतृत्व करता हुआ आगे बढ़ने लगा। उसने सोचा,

जामोरिन के महल पर कब्जा होते ही युद्ध समाप्त हो जाएगा। वह बडी बेसब्री से महल की ओर दौड पडा।

इसी समय वालू दाँतो मे कटार दबाये और दोनो हाथो मे तलवार लिये पुर्तगीज़ो के झुड पर चीते-सा झपट पडा। उसके साथी भी नारे लगाते हुए पुर्तगीज़ो पर टूट पडे।

मार्शल इस हमले से चौक उठा। वह अपने सैनिको को मोर्चा लगाने का आदेश दे ही रहा था कि वालू ने उस पर तलवार से सधा हुआ वार किया। पर मार्शल भी गफलत मे न था। वह वार बचा गया।

वालू ने देखा देर करने से काम न चलेगा। वह तलवार फेककर हाथ मे कटार ले मार्शल से जाकर लिपट गया। मार्शल इस हमले के लिए तैयार न था। वह नीचे गिर पडा। उसके साथ-साथ वालू भी नीचे जा गिरा। मार्शल को सकट मे देखकर पुर्तगीज सैनिक उसे बचाने के लिए दौडे। एक पुर्तगीज़ी सैनिक ने वालू की ओर ताककर भाला चलाया पर कान्हा ने बीच मे ही उस भाले को रोक लिया।

उधर वालू पर तो जैसे खून सवार था। उसे मार्शल, मार्शल नही, काल ही नज़र आ रहा था। उसने पूरी शक्ति से मार्शल के सीने मे कटार भोक दी। मार्शल कराह उठा, फिर तो एक, दो, तीन—जाने कितने घातक वार वालू ने किये।

उधर उसके साथी पुर्तगीज़ी सैनिको को गाजर-मूली की तरह काट रहे थे।

थोडी ही देर मे पुर्तगीज़ो का सफाया हो गया। मार्शल की मौत की खबर चारो ओर तेजी से फैल गयी थी। उसे सुन-कर जामोरिन के सैनिको और जनता का उत्साह दुगुना हो रहा

था, पर पुर्तगीजो की हिम्मत टूट रही थी।

वे अब भागने की तैयारी करने मे लग गये। पर उधर जामोरिन अपने सेनानायको के साथ दीवार बनकर खड़ा था। पुर्तगीजो के कमजोर इरादो का पता लगते ही उसने उन पर आक्रमण कर दिया। पलभर मे पुर्तगीजी जहाज धू-धू कर जल उठे।

कालीकट के तट पर जैसे अग्निदेवता ताडव नृत्य कर रहे थे। लपलपाती लपटे आसमान को छूने की कोशिश कर रही थी।

भयकर मारकाट के बाद पुर्तगीजो का निराकुल सफाया कर दिया गया। सारे कालीकट मे हर्ष की लहर दौड गई।

अब तक जामोरिन बालू के पास स्वय पहुँच गया था। बालू के शरीर पर अनेक घाव लगे थे। उनसे खून भी बह रहा था। पर बालू ख़ुशी से मुसकरा रहा था। लगता था, जैसे उसकी वर्षों की तपस्या पूरा हो गयी हो।

जामोरिन ने बालू को गले से लगा लिया। "बालू, मेरे भाई, मैं तुम्हारा उपकार कैसे चुकाऊ? तुमने मुझे ही नहीं, कालीकट को भी नई जिन्दगी दी है। मैं चाहता हू कि तुम अब सदा के लिए कालीकट की रक्षा का भार सम्हाल लो। तुम हमारे प्रधान सेनापति बन जाओ।"

बालू ने बड़ी विनम्रता से उत्तर दिया, "महाराज, यह राजकाज आप लोगो को मुबारक। मैं एक साधारण मछुए का बेटा, ऐसा ही भला। हा, जब भी कालीकट को मेरी आवश्यकता होगी, शीघ्र आ पहुँचूंगा। मेरी प्रतिज्ञा पूरी हुई। अब मैं एक बार अपने गांव जाना चाहता।"

जामोरिन ने हँसकर कहा, "वालू, यह भी तो तुम्हारा गाँव है।"

वालू ने भी हँसकर उत्तर दिया, "महाराज, मैं कब इनकार करता हूं।" फिर वह बहुत गम्भीरता से बोला, "महाराज, और यही क्यो, जिस-जिस स्थान पर अत्याचार और अन्याय के खिलाफ मैं भुजा उठा सकता हू, मैं उसे भी अपना देश और अपना गाँव समझता हू।" उसने आगे कहा, "महा-राज, जाने क्यो पिछले दिनो से जब भी मैं अपने दिल से पूछता हू तो जैसे कोई कहता है—'वालू, जिस देश मे तुम अन्याय के खिलाफ लड सको, क्राति के लिए अपनी भुजा उठा सको, उसे अपना देश समझो'।"

विदा

आज वालू कालीकट छोडकर जा रहा था। समुद्र-तट पर जैसे सारा कालीकट उमड पडा था। सबकी आँखो मे आँसू थे।

वालू का भी गला भर आया था, पर अपने गाँव लौटने की भी उसे खुशी थी। उसे विश्वास था कि गाँव मे शायद उसे उसका बापू मिलेगा। कान्हा मिलेगा। बचपन के और साथी मिलेंगे।

किस बात की चिन्ता ! मुझे तो लगता है कि बालू को शायद शीघ्र ही लौटना पड़े, क्योंकि पुर्तगीजी खतरा अभी समाप्त नहीं हुआ है।"

बालू भी यह बात जानता था, और इसीलिए वह एक बार अपने गांव हो आना चाहता था। वह सोचता था कि पता नहीं अगले युद्ध का क्या परिणाम हो और वह फिर अपने गाँव जा भी पाए या नहीं।

वह एक बड़ी-सी नाव पर जा बैठा। वहां कान्हा पहले ही पतवार संभाले बैठा था। उसे देखकर बालू मुसकरा उठा। धीरे-धीरे नाव चल पड़ी। तट छूटने लगा और फिर वह पूरी तरह नजरों से ओझल हो गया। बालू ने देखा, थोड़ी देर में शाम घिरने ही वाली है। वह डूबते हुए सूरज को देखने लगा।

धीरे-धीरे सूरज पानी में डूब गया। रात घिर आयी तो बालू की नाव रोशनी से जगमगा उठी। उसका प्रतिबिम्ब समुद्र के पानी पर लहराने लगा। बालू ने अंधकार के सीने पर तनी रोशनी की इन बरछियों को देखा। उसने सोचा, जिन्दगी तो रोशनी की है, जो तुलना में कमजोर होते हुए भी अंधियारे से मोर्चा लेने का सूरज से काम संभाल लेती है।

□□